ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 19 मई 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 19 मई 2019 से 25 मई 2019

ज्येष्ठ कृ. – 01 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 61, अंक 20, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## डी.ए.वी. पटियाला में हुआ 'वैदिक-भजन-संध्या' का आयोजन

आर्य युवा समाज', डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिंद्र रोड, पटियाला द्वारा परमपिता परमेश्वर का आशीर्वाद लेते हुए बच्चों को 'वैदिक– विचारधारा' एवं 'नैतिक–मूल्यों' से संस्कारवान बनाने के उद्देश्य से महान शिक्षाविद्, त्यागमूर्ति 'महात्मा हंसराज जी की जयंती' पर 'वैदिक–भजन–संध्या' का आयोजन किया गया। बच्चों और शिक्षकवृन्द ने अपने मधुर तथा भक्तिभाव पूर्ण भजनों से स्कूल परिसर को भक्तिमय बना दिया। इस भजन संध्या की अध्यक्षता वैदिक विद्वान् 'ब्रह्मचारी पूज्य स्वामी विदेह योगी जी (कुरुक्षेत्र)' ने की। समारोह का शुभारम्भ 'यज्ञ' करके किया गया, यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान की।

प्राचार्य विवेक तिवारी ने अतिथियों का अभिनन्दन किया। स्वामी जी ने डी.ए.वी. संस्था को देश की एक महान समाज सेवी शिक्षा संस्था बताया कि यह दयानन्द और वेदों के आदर्शों की मर्यादा व सिद्धांतों पर चलते हुए बच्चों को आधुनिक शिक्षा देने के साथ–साथ उन्हें भारतीय संस्कृति से जोड़े रखती है।

संगीत अध्यापिका श्रीमती रजनीत

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

## डी.ए.वी. सैक्टर 15-ए, चण्डीगढ़ में 21 कुंडीय महायज्ञ

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर–15ए, चण्डीगढ़ में प्राचार्या के दिशानिर्देशन में नवसत्र 2019–20 के शुभारंभ पर 21 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। कक्षा–पाँचवीं से बारहवीं तक के सभी विद्यार्थियों ने विभिन्न हवनकुंडों पर बहुत ही श्रद्धापूर्वक यज्ञीयकार्य को पूर्ण किया।

मुख्य हवनकुंड पर प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा तथा स्त्री आर्य समाज सैक्टर – 16 के माननीया सदस्याएँ यजमान पद पर सुशोभित हुई। आचार्य दाऊदयाल शर्मा धर्माचार्य, आर्य समाज सैक्टर–16डी, चण्डीगढ़ एवं विद्यालय के धर्माचार्य आचार्य रमेश शास्त्री के ब्रहमत्व में यज्ञीयकार्य सुसम्पन्न किया गया। विद्यालय परिसर यज्ञ की सुगन्ध से सुगंधित हो गया। इस सुखद वातावरण को देखकर सभी याज्ञिकजन आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

यज्ञोपरांत दयानन्द बाल आश्रम के विद्यार्थियों के लिए कलम, पेंसिल, कॉपी आदि की एक 'किट' धर्मार्थ रूप में विद्यालय की ओर से दिए गए जिसके लिए स्त्री आर्य समाज की सदस्याओं ने भूरि–भूरि प्रशंसा की व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अन्त में, यज्ञ में सभी उपस्थित आगन्तुकों ने विद्यार्थियों पर पुष्पवर्षा करते हुए शुभ मंगलकामनाएँ भेंट कर आशीर्वाद दिया। अन्त में शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण किया गया।

## डी.ए.वी. थाने (मुम्बई) में मनाया गया विश्व पृथ्वी दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, थाने में प्रत्येक वर्ष की तरह इस साल भी विश्व पृथ्वी दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रात:कालीन प्रार्थना सभा में पृथ्वी संरक्षण के लिए एक विशेष कविता का पाठ पढ़ा गया। बच्चों ने पर्यावरण रक्षा के लिए एक प्रतिज्ञा ली।

इस अवसर पर वैदिक यज्ञ का भी आयोजन किया गया। "यज्ञ पर्यावरण रक्षा का सबसे सशक्त माध्यम है" – इस बात की शिक्षा बच्चों को दी गई। यज्ञ समाप्ति पर प्रधानाचार्या जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं एवं आदर्शों का पालन करते हुए राष्ट्र की उन्नति के लिए वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान देना चाहिए एवं पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ को दैनिक जीवन में स्थान देना चाहिए।

यज्ञोपरांत डी.ए.वी. विद्यालय के समीप रहने वाले अभिभावकों को बुलाकर एवं स्कूल के बच्चों के साथ मिलकर विद्यालय के आस–पास वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया जिसमें सभी ने अत्यधिक प्रसन्नतापूर्वक भाग लेते हुए एक–एक वृक्ष लगाया और पृथ्वी की रक्षा करने का संकल्प लिया।

प्रधानाचार्या जी ने अभिभावकों को इस अवसर पर सम्मानस्वरूप एक–एक पौधा भेंट करते हुए सन्देश दिया कि हमारी संस्था, हमारे डी.ए.वी. परिवार का एक ही लक्ष्य है – श्रेष्ठ समाज और श्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण लिए बच्चों में उत्तम संस्कार के बीज बोना जिससे भविष्य में वे पृथ्वी के संरक्षण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते रहें। साथ ही उन्होंने श्रेष्ठ भारत के सृजन में स्वामी दयानन्द के बताये मार्ग पर चलकर इस तरह के कार्यों को करते रहने पर विशेष ज़ोर दिया। उक्त अवसर पर आए अतिथिरूप अभिभावकों ने विद्यालय के इस पहल की भूरि–भूरि प्रशंसा की और प्राचार्या श्रीमती जुनेजा को उनके नेतृत्व के लिए साधुवाद किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 19 मई 2019 से 25 मई 2019

# यज्ञ रचा, दान कर

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**न त्वां शतं चन ह्रुतो, राधो दित्सन्तमामिनन्।**
**यत् पुनानो मखस्यसे।।**

ऋग् ६.६१.२७

ऋषिः **अमहीयुः आङ्गिरसः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (हे आत्मन्!), (**राधः**) धन को, (**दित्सन्तं**) दान करना चाहते हुए, (**त्वा**) तुझे, (**शतं चन**) सौ भी, (**ह्रुतः**) कुटिल वृत्तियाँ व कुटिल जन, (**अ आमिनन्**) हिंसित अर्थात् मार्ग–च्युत न कर पायें, (**यत्**) जब, (**पुनानः**) (स्वयं को) पवित्र करता हुआ। (तू), (**मखस्यसे**) यज्ञ रचाता है।

● हे पवमान सोम! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्विक–वृत्ति जीवात्मन्! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्हीं सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत–सी कुटिल स्वार्थ–वृत्तियाँ और बहुत–से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान–व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ–वृत्ति कहती है कि सहस्त्र, दश सहस्त्र, पचास सहस्त्र, लाख, दो लाख रूपया तुम अन्यों को दान कर कर रहें हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो? देखो, सब अपनी सम्पति बढ़ा रहे हैं; जो सहस्त्रपति है वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई–कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि स्वयं तो मोटा–झोटा पहनो, रूखा–सूखा खाओ, झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना। हे आत्मन्! तू उस स्वार्थ–वाणी को मत सुन। तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो? उनमें सब खाऊ–पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन्! तू उन उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ–भावनाएँ और सौ स्वार्थी–जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन्! वेद–शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान–खाते में डाल और उसे लोक–कल्याण में व्यय कर। दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, "अकेला भोग करनेवाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है"।

❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

---

# त्यागमयी देवियाँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

महात्मा आनन्द स्वामी ने देवी पार्वती पर कथा सुनाते हुए बताया [redacted]? देह के [redacted] का पुण्य–पाप से जो फल प्राप्त होता है, उसको भोगकर फिर ज्ञानी हो जाता है, फिर पुण्य से सिद्धों के संग–संगति को प्राप्त होता है, और फिर सिद्धों की कृपा से योगी होता है।' कोरा ज्ञान भी कुछ नहीं बनाता और खाली योग भी कुछ नहीं, दोनों के मिलाप से ही सिद्धि होती है।'

'ब्रह्मचर्यपूर्वक रहते हुए पूरे उत्साह से रेचक, पूरक, कुम्भक प्राणायाम करते चले जाओ।'

मनुष्य का यही धर्म है कि अपना कर्त्तव्य पूर्ण करे, जहाँ तक बन सके दु:खियों की सेवा सहायता करे।'

**अब आगे ...**

शिव जी व पार्वती की एक कथा बहुत विख्यात है, और है भी बड़ी मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद। उसके कुछ बड़े ही रोचक प्रसंग हैं :

एक बार शिव जी तथा पार्वती, दोनों वेष बदलकर अपने बैल को साथ लिए यात्रा को निकले। बैल पर किसी को सवार न देखकर, चलते हुए पथिकों ने कहा – 'देखो! ये कैसे मूर्ख लोग हैं। बैल को यों ही लिए जाते हैं। इतनी समझ नहीं है कि उस पर एक सवार हो जाय।'

शिव जी यह सुनकर बैल पर सवार हुए और आगे बढ़े। थोड़ी दूर गए होंगे कि एक दूसरे मनुष्य ने कहा, 'तुम कैसे मूर्ख आदमी हो? तुम्हें लज्जा नहीं आती कि तुम्हारी कोमलांगी स्त्री तो पाँव घसीटती चल रही है और तुम हट्टे–कट्टे होकर भी बैल पर सवार हो?'

शिव जी उतर पड़े और पार्वती को बैल पर सवार कर दिया। थोड़ी दूर जाने पर एक और मनुष्य मिला, उसने कहा, 'देखो, कैसा समय आ गया है। पति तो पाँव घसीट रहा है और स्त्री सवार चली जा रही है। जब बैल तगड़ा है तो दोनों क्यों नहीं सवार हो जाते?'

यह सुनकर पार्वती को लज्जा आ गई। वह उतरने लगी तो शिव जी मुस्कराए कहा, 'उतरो मत! मैं भी साथ ही बैठता हूँ।' कहकर आप भी सवार हो गए।

थोड़ी देर में और दो–तीन आदमी आ निकले; बोले, 'भाई! प्रतीत होता है कि यह बैल माँगकर लाए हो, तभी तो इस पर दोनों के दोनों लदे हो। अपना होता तो ऐसा न करते। जब तुम दोनों इतने हृष्ट–पुष्ट हो तो इस बेचारे पशु को अपने बोझ से क्यों मार रहे हो? तुम दोनों तो स्वयं इतने शक्तिशाली हो कि इसे अपनी पीठ पर लाद लो।'

शिव जी यह सुनकर उतर पड़े और बैल को एक बाँस के डंडे में बाँधकर एक सिरा उसका पार्वती के कंधे पर और एक अपने कंधे पर रखकर आगे बढ़े। सामने बहुत–से युवक मनुष्य आ रहे थे। इस अद्‌भुत दृश्य को देखकर सभी लोग तालियाँ पीटने और शिव जी को बुरा–भला कहने लगे।

बैल बेचारा सीधा–सादा जीव! बच्चों की तालियों और शिव जी के इस बर्ताव से घबराकर उछला–कूदा और रस्से को तुड़ाकर पुल पर से नदी में कूद पड़ा। शिव ने उसे पानी से निकाला और पार्वती से कहा, 'प्रिये! देखा यह संसार? क्या कोई इसे प्रसन्न कर सकता है?'

पार्वती कहने लगी, 'यह सत्य है, परन्तु दु:खियों की सेवा से अपना मन तो प्रसन्न होता ही है। आपको दु:खियों की सहायता करते ही रहना चाहिए।'

शिव मुस्करा–भर दिये।

पार्वती ने शिव की सेवा करते हुए न केवल ज्ञान ही प्राप्त किया अपितु अष्टांग योग के सारे रहस्य भी जान लिये। सबसे बढ़कर यह कि उसने इस ज्ञान और योग को अपने तक सीमित नहीं रखा, अपितु दु:खियों के दु:ख दूर करने में इनका प्रयोग किया।

देवियाँ क्या–कुछ नहीं कर सकतीं! इनकी शक्ति महान् है। पतिदेव को सेवा–भाव से वश में करके उन्हें जिधर चाहें ले–जा सकती हैं। पार्वती ने शिव जी को पीड़ितों की सहायता की प्रेरणा करते–करते ऐसी स्थिति बना दी कि जिस किसी को कोई कष्ट होता, वही 'शिव–पार्वती' की दुहाई देने लगता।

पार्वती के जीवन की एक और घटना उल्लेखनीय है। इससे सिद्ध होता है कि गृहस्थ में रहकर पूर्ण योगी होने के अतिरिक्त देश–रक्षा के लिए युद्धस्थल में भी अपनी शक्ति प्रकट की जा सकती है।

इतिहास बतलाता है कि अफगानिस्तान

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

# आर्यसमाज का वेद–विषयक दृष्टिकोण

● डॉ. गंगा प्रसाद उपाध्याय

श्रीयुत पं. जवाहरलाल नेहरु जी ने अभी हाल में एक उत्तम पुस्तक लिखी है जिसका नाम है 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' (Discovery of India)। उसमें अनेक उत्तम–उत्तम बातों के अतिरिक्त आर्यसमाज और वेदों के विषय में दो उल्लेखनीय वाक्य हैं–

1. Many Hindus look upon the Vedas as revealed scriptures. This seems to me to be peculiarly unfortunate, for thus we miss their real significance the unfolding of the human mind in the earliest stages of thought.
2. Its slogan was back to the Vedas. This slogan really meant an elimination of development of the Aryan faith since the Vedas.

1. बहुत से हिन्दू वेदों को ईश्वर–कृत मानते हैं। मैं इसको बड़ा दुर्भाग्य समझता हूँ, क्योंकि इसमें वेदों की वास्तविक उपयोगिता जाती रहती है अर्थात् विचार के आरंभ–काल में मानवी मस्तिष्क ने कितना विकास किया।

2. आर्य समाज ने घोषणा की कि 'वेदों की ओर लौटो'। इस घोषणा का अर्थ यह है कि वेदों के काल से लेकर आर्य धर्म में जो विकास हुआ उसका परित्याग कर दिया जाए।

इन दोनों वाक्यों का एक–दूसरे से सम्बन्ध है। अर्थ प्रायः एक ही है अर्थात् वेदों की यह उपयोगिता तो है कि संसार के आरंभकाल में मानवी मस्तिष्क ने जो उन्नति की उसका पता लग जाए, परंतु यदि हम वेदों को ईश्वर–कृत मान लें तो वेद आज भी आचरण करने योग्य पुस्तक सिद्ध हो जाते हैं। ऋषि दयानन्द का दृष्टिकोण वेदों के विषय में श्री पं. जवाहरलाल से भिन्न था और आजकल के संस्कृतज्ञों का लगभग वही दृष्टिकोण है जो पं. जवाहरलाल जी का। परंतु यह तो निश्चित है कि स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण वही है जो प्राचीन ऋषियों का है। यहाँ तक कि श्री शंकराचार्य जी आदि मध्यकालीन आचार्य भी वेदों को ईश्वरकृत ही मानते आए हैं। श्री शंकर स्वामी ने बौद्धों का खण्डन भी इसीलिए किया था कि वे श्रुति को स्वतः प्रमाण मानते हैं। वे लिखते हैं कि वेद सूर्यवत् स्वतः प्रमाण हैं। अन्य शास्त्रों को उन्होंने स्मृति की कोटि में गिना है जो परतः प्रमाण हैं।

पं. जवाहरलाल जी का कहना है कि हम वेदों का मान तो करते हैं परन्तु हम आज उन पर चलने के लिए तैयार नहीं। दृष्टान्त के तौर पर आप आज स्टीवेन्सन के रैकिट नामक इंजन को लीजिए। यह सबसे पहला इंजन था। रेलगाड़ी के इतिहास में जॉर्ज स्टीवेन्सन का नाम अमर रहेगा और रैकिट को लोग बड़े सम्मान से याद करते हैं क्योंकि जितने इंजन आजकल चल रहे हैं या जितने भविष्य मे चलेंगे उन सबका आदि–पुरुष (लकड़दादा) रैकिट था। परन्तु कोई इंजन चलानेवाला आज रेल में रैकिट को लगाने के लिए तैयार न होगा। रैकिट इंजनों का पूर्वज तो है, परन्तु विकसित नहीं है। आजकल उन्नति करते–करते इंजनों में बहुत बड़ा सुधार हो गया है। यही हाल वेदों का है। वेद हमारी प्राचीनतम पुस्तकें हैं, हमारे ऋषियों की महती कृति हैं, परन्तु उस समय से लेकर आज तक इतनी उन्नति हो चुकी है कि वेदों की हम पूजा कर सकते हैं, उनको सम्मान से याद भी कर सकते हैं, परन्तु उनके अनुकूल आचरण नहीं कर सकते। वेदों का मूल्य तो है परन्तु ऐतिहासिक, न कि व्यावहारिक; वे पुराने सिक्के हैं– अद्भुतालय में रखने के योग्य, प्रदर्शनी में प्रदर्शन के योग्य। परन्तु इस योग्य नहीं कि आधुनिक काल में उनको पथ–प्रदर्शक समझा जा सके।

यह है मौलिक भेद पं. जवाहरलाल जी के दृष्टिकोण में और आर्य समाज के दृष्टिकोण में। और यदि पण्डित जी की बात ठीक है तो आर्य समाज की नींव ही धड़ाम से नीचे आ गिरती है और ऋषि दयानन्द का किया–कराया सब नष्ट हो जाता है। वेदों का ऐतिहासिक मूल्य तो ईसाई और मुसलमान भी मानने के लिए तैयार हैं। प्रत्येक पुस्तक का ऐतिहासिक मूल्य है क्योंकि वह अपने युग के विषय में कुछ बताती है, परन्तु इतने से वह धार्मिक पुस्तक नहीं हो सकती।

यहाँ एक प्रश्न उठता है और वह वेदों की आन्तरिक साक्षी पर निर्भर है– क्या वेदों की शिक्षा ऐसी है, जैसे मनुष्य के बचपन की चीज होती है अर्थात् अधूरी और धुँधली? और जो वेदों के पश्चात् मनुष्यों ने वेदों के अतिरिक्त जो कुछ अन्वेषण किया वह अधिक स्पष्ट और अधिक पूर्ण है? क्या यह ज्ञात होता है कि जैसे तेल का मिट्टी का दीपक मनुष्य ने पहले बनाया, और अब बिजली के बल्ब बनाए जो अधिक उपयोगी और अधिक पूर्ण है, इसी प्रकार वेदों में जो सिद्धान्त दिए गए हैं, वे अपूर्ण और धुँधले हैं और आजकल जो विकास हुआ है वह अधिक तात्त्विक, अधिक उपयोगी और स्पष्ट है?

यह बात तो ठीक है कि वेदों का आविर्भाव मानव–जाति के बाल्यकाल की चीज् है, परन्तु बाल्यकाल का अर्थ है क्या? इसके दो अर्थ हो सकते हैं। पहला यह कि जब वेदों का आविर्भाव हुआ तो मानव–जाति को उत्पन्न हुए बहुत समय व्यतीत नहीं हुआ था। सृष्टि के कितने पदार्थ हैं तो मानव–जाति के बाल्यकाल में हुए परन्तु वे सर्वथा पूर्ण थे, जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु आदि। सूर्य में तत्पश्चात् क्या उन्नति हुई यह कहना कठिन है। दूसरा अर्थ यह है कि मनुष्य के अपने बाल्यकाल में जो वस्तुएँ बनाई वे सर्वथा अविकसित थीं, आरम्भ–मात्र थीं। शनैः–शनैः उत्तरोत्तर उन्नति होती गई, जैसे कपड़े, मकान, बर्तन इत्यादि। अब प्रश्न यह है कि जब हम कहते हैं कि वेद मानव–जाति के बाल्यकाल की वस्तु है तो इन दोनों में से हमको कौन–सा अर्थ अभिप्रेत है? यदि वेदों को मनुष्य ने अनुभवशून्य और अधमतम अवस्था में आरम्भ किया जैसे बच्चा आरम्भ में पाठशाला में भरती होते किया करता है, तो वेदों की भाषा सर्वथा अपूर्ण, वेदों का शब्दविन्यास सर्वथा संकुचित, वेदों का अलंकार हर प्रकार से भोंडे वेदों के भाव सर्वथा अशिक्षित, अनुभवशून्य, वेदों के छन्द सर्वथा बेतुके होने चाहिएँ और वेदों के पश्चात् आने वाली पुस्तकों की भाषा विकसित, भाव परिमार्जित, सिद्धान्त पूर्ण दार्शनिक, युक्तियाँ सर्वथा विशद, अलंकार सर्वथा समुन्नत और कोमल होने चाहिएँ। वेदों की भाषा और भावों में वर्तमान ग्रन्थों की भाषा और भाव की अपेक्षा उतनी ही कमी होनी चाहिए, जितनी आजकल के वायुयान और पुरानी भैंसों की गाड़ी में है। यदि ऐसा है तो हम मान लेंगे कि वेदों का ईश्वरकृत होना गलत है और वेद हमारे पूर्वजों की उस समयं की कृति हैं, जब उन्होंने उन्नति का मार्ग बनाना आरम्भ ही किया था। अभी भूमि–खनन ही आरम्भ हुआ था। सीमेंट की सड़क की स्वच्छता और सुगमता प्राप्त न थी। यदि ऐसा ठीक है तो यह भी कहना पड़ेगा कि वेद हमारी पूजा के योग्य अवश्य हैं क्योंकि वे पुराने हैं, परन्तु वे प्रयोग में लाने के योग्य नहीं।

और यदि पहला अर्थ है अर्थात् वेदों की भाषा अत्यन्त विशद, भाव समुन्नत और सिद्धान्त विकसित हैं तो दो बातों में से एक अवश्य ही ठीक होगी। या तो वेद सूर्य के समान ईश्वरकृत होंगे, या जब मानव–जाति की अपेक्षा प्रारम्भिक और अपूर्ण तथा अविकसित होना चाहिए। आज जो कुछ मैं लिख रहा हूँ, वह विकास की एक नियत अवस्था में प्राप्त हो चुका है। साठ वर्ष पूर्व जब मैं पाठशाला में भरती ही हुआ था और लकड़ी की पट्टी पर लिखता था, उस समय के मेरे अक्षरों और आजकल के अक्षरों में भेद है। परन्तु यदि मेरी कोई पुरानी कापी मिल जाय और उसमें अत्यन्त सुन्दर अक्षर मिलें तो यही कहना पड़ेगा कि वह अक्षर मेरे नहीं अपितु किसी अधिक विकसित पुरुष के हैं।

इस प्रकार वेदों के विषय में तीन सम्भावनाएँ हो सकती हैं–

(1) वेद अत्यन्त अपूर्ण और प्रारम्भिक हैं। इसीलिए पिछली शताब्दी के विद्वान् वेदों को गडरियों के गीत या बच्चों की बिलबिलाहट बताया करते थे।

(2) वेद अत्यन्त विशद, विकसित और ऐसी अवस्था के हैं जब मनुष्य–जाति पूर्ण विकास को प्राप्त हो चुकी थी। उस दशा में उनका अविकसित या अर्द्ध–विकसित साहित्य मिलना चाहिए, जो वेदों से पूर्व था, जिससे पता चल जाए कि वेदों तक पहुँचने से पूर्व मानव–जाति के साहित्य को किस–किस अवस्था में होकर गुज़रना पड़ा। इसके साथ ही यह भी सिद्ध होना चाहिए कि वैदिक काल के पश्चात् मानवी भाषा और भावों ने इतनी उन्नति और की।

(3) यह कि वेद हैं तो प्राचीनतम, परन्तु इतने विकसित और पूर्ण हैं कि इनको मानवी कृति कहना ही असंभव है।

स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की तीसरी पोजीशन है और स्वामी दयानन्द से पूर्व के ऋषि–मुनि तथा मध्यकालीन आचार्यों का भी यही मत रहा है। मनुष्य ने उन्नति की है और उनके विभागों में, परन्तु उसकी कृति वेदों से अब भी उतनी पीछे है जितनी बिजली के लैम्प सूर्य से पीछे हैं। सूर्य अत्यन्त प्राचीन और अत्यन्त पूर्ण है। आरम्भिक इसलिए है कि सृष्टि के आरम्भ में हुआ। पूर्ण इसलिए है कि मनुष्य ने बनाया नहीं। सूर्य की उत्पत्ति के समय

मनुष्य का बाल्यकाल अवश्य था। उसका अनुभव भी शून्य के समान था। परन्तु जो चीज़ उसकी बनाई न थी उसमें पूर्णता थी। विद्यार्थी की कापी पर अध्यापक उसके अनुकरण के लिए जो पहली सुन्दर पंक्ति लिख देता है वह प्रारंभिक होते हुए भी पूर्ण होती है, क्योंकि प्रारंभिक तो बच्चों की अपेक्षा से है। जिस गुरु ने लिखा है उसका बाल्यकाल नहीं, वह तो पहले से विकसित हो चुका है।

ऋग्वेद ने इस विषय में एक बात लिखी है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वेद में लिखा है –

**"सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा**
**पूर्वमकल्पयत्"**।(ऋग्वेद 10/190/3)

यह छोटा–सा मंत्र है और पूर्ण परिचित, परन्तु इसके महत्त्व पर लोगों ने विचार नहीं किया। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा ने इस कल्प में सूर्य–चन्द्र आदि को उसी प्रकार बनाया जैसे पूर्वकल्पों में 'यथापूर्व'। यह विशेष वाक्य है। इसके अर्थ बड़े विस्तृत हैं। इससे पता चलता है कि सृष्टि को बनानेवाली कोई नई अनुभव अप्राप्त प्रारंभिक शक्ति नहीं है। यह शक्ति पूर्ण है। अत्यन्त पुरानी है। सृष्टि के विषय में यह धारणा भूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनों कालों तक जाती है। यह अपूर्ण और अविकसित या अर्द्धविकसित भावना नहीं हो सकती। वेदों के 'धाता' और 'यथा–पूर्व' पर विचार कीजिए। मनुष्य कर्त्ता हो सकता है, परन्तु 'धाता' नहीं। 'धाता' और विधाता का परस्पर सम्बन्ध है। वास्तविक विधाता तो धाता ही है जिसने न केवल सृष्टि को बनाता है अपितु धारण भी करता है।

इस विषय में वेदों के पश्चात् आनेवाले साहित्य ने क्या उन्नति की? यह देखना है। वेदों के पश्चात् का साहित्य दो भागों में बँटा है – एक वैदिक और दूसरा अवैदिक। वैदिक साहित्य तो वेदों की ही नकल है।

**श्रुतेरिवार्थ स्मृतिरन्वगच्छत्।**

वेद अपौरुषेय और समस्त ऋषि–कृत साहित्य समझा जाता है।

दूसरा अवैदिक वेदों के विरोध अथवा उपेक्षा में बनाया गया है। कुर्आन, बाइबल आदि में उपर्युक्त मंत्र के भाव से विशद क्या कोई भाव मिलता है? यदि मिलता है और उत्तरकालीन पुस्तकों में इतना ही विशद है तो इसको अनुकरण कहेंगे। यदि कम मिले तो कहेंगे कि साहित्य में अवनति आ गई, और यदि इससे बढ़कर कोई विचार है तो कौन–से ऋषि अपनी अन्तरात्मा में सृष्टि के आरम्भकाल में इस भाव को 'देख' सके–उनकी चक्षु कितनी विचित्र और विकसित रही होगी!

अब थोड़ा–सा भाषा–सम्बन्धी बातों पर विचार कीजिए। ध्वनि, शब्द, वाक्य, छन्द इत्यादि अनेक बातें है जिनसे वेदों की विशदता का परिज्ञान हो सकता है। केवल भाषामात्र एक बात नहीं, अपितु कईं बातें हैं, संज्ञाओं के रूप में उनका रूपान्तर, क्रियाओं के रूपान्तर इत्यादि। विद्वानों का कहना है कि संस्कृत भाषा संसार की सब भाषाओं में विशदतम है। 'धाता' 'अकल्पयत्' इन दो शब्दों में निहित भावों पर विचार कीजिए। सृष्टि का विधाता मेज़ के बनानेवाले बढ़ई के समान नहीं। बढ़ई विधाता है धाता नहीं, विधाता भी क्यों कहो? बढ़ई जिस प्रकार मेज़–विधाता है उसमें वैसा विधातृत्व अथवा धातृत्व कहाँ? वह तो बाहरी वस्तु को घड़ देता है। उसका और लकड़ी का बाह्य संपर्क है। कल्पना कीजिए उस मस्तिष्क की विशदता का जिसने सृष्टि–कर्त्ता के लिए विधाता या धाता शब्द का उपयोग किया।

अच्छा, ऋग्वेद के एक और छोटे–से वाक्य को लीजिए –

**"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं"**
(ऋग्वेद 1/164/46)

समस्त सृष्टि के 'एकत्व' और उसके रचयिता के 'एकत्व' का भाव क्या बच्चों की अनुभवशून्य अवस्था का भाव है? क्या आज तक दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, धर्म–संस्थापकों आदि ने इससे विशद भाव का आविर्भाव किया? ईश्वर का एकत्व और उसके गुणों और उन गुणों के सूचक शब्दों का बहुत्व कितनी बड़ी बात है! "विप्रा बहुधा वदन्ति" की मनोवैज्ञानिक महत्ता पर विचार कीजिए। मानवी मस्तिष्क की प्रगतियों की भिन्नता को देखिए–"विचित्र–रूपाः खलु चित्तवृत्तयः"। संसार की वस्तुओं को देखते समय मनुष्य भी भावनाओं में कितनी विभिन्नता होती है और उस विभिन्नता से प्रेरित होकर उसके शब्दों में कितनी विभिन्नता आ जाती है! परन्तु उस समस्त विभिन्नता के पीछे सत्यता की एकता कैसी छिपी है। सत्य एक है, शब्द अनेक हैं। ईश्वर एक और उसके सूचक शब्द अनेक। वेदों के पश्चात् उनकी प्रतिद्वन्द्विता में अनेक सिद्धान्त और मतों की स्थापना हुई, परन्तु क्या किसी संस्थापक ने इससे अच्छा कोई विचार पेश किया? कईं नवीन धर्म इस बात का दावा करते हैं कि उन्होंने एक ईश्वरवाद की स्थापना की। यह संभव है कि अनेक–ईश्वरवाद के प्रचार की अवस्था में उन्होंने कुछ सुधार किया हो, परन्तु ईश्वर का जो स्वयं वेदों ने अति प्राचीन काल में स्वरूप रखा वह पीछे के मतों में दृष्टिगोचर नहीं होता।

समाजवाद का सबसे अच्छा सिद्धान्त वर्णाश्रम–धर्म है। यह समाज–सिद्धान्त सूर्य की भाँति प्राचीनतम है और सूर्य के समान ही पूर्ण। इसमें पीछे से अवनति तो हुई, परन्तु उन्नति नहीं हुई। आधुनिक साम्यवाद पूँजीवाद की अपेक्षा उत्कृष्ट हो सकता है, परन्तु यह न टिकाऊ है न सर्वोत्कृष्ट। मानव–जाति के अनेक व्यक्ति जब स्वभाव से ही सम नहीं तो उनका जीवन का पुरोगम समान कैसे हो सकता है? कहीं–न–कहीं तो भेद करना ही पड़ेगा। यह भेद गुण–कर्म–स्वभावानुसार ही अत्यन्त नैसर्गिक और कल्याणप्रद हो सकता है।

इसी प्रकार जीवन के अनेकानेक सिद्धान्त हैं जिनका वेदोक्त रूप ही पूर्णतम कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक बात पर विचार कीजिए। समाज की नींव है विवाह–व्यवस्था। वेदों में विवाह की एक–पति–भाव और एक–पत्नी–भाव की जो व्यवस्था है उससे अच्छी कोई व्यवस्था नहीं है –

**इहैव स्तं मा वि यौष्टं**
**विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।**
**क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।।**
(ऋग्वेद 10/85/42)

इसमें दाम्पत्य भाव का कितना उच्चतम चित्रण है! स्त्री–पुरुष घर में साथ रहें। कभी अलग न हों, पुत्रों और पौत्रों के साथ आनन्द से रहें। वैदिक काल के पश्चात् विवाह–व्यवस्था में जो–जो जहाँ–जहाँ परिवर्तन हुए, उन्होंने समाज में आपत्तियाँ तो उत्पन्न कर दीं, उनसे समाज की बुराइयाँ दूर नहीं हुईं। आजकल वैज्ञानिक युग में विवाह में जो सुधार हो रहे हैं उनसे विवाह–व्यवस्था की जड़ ही कट रही है। अमीर लोग धोखे में हैं। वे समझते हैं कि दाम्पत्य दासता को दूर करने से वे सुखी हो जाएँगे, परन्तु वे यह नहीं देखते कि जिस समाजरूपी वृक्ष को वे सींचना चाहते हैं उसी की जड़ कट रही है! आजकल प्रत्येक युवक पति तो बनना चाहता है परन्तु उसको पिता बनना स्वीकार नहीं। प्रत्येक युवती को माता और जननी बनने से घृणा है। वह कर्त्तव्य की मर्यादा को दासता की बेड़ी समझकर तोड़ना चाहती है। यह वैदिक सिद्धान्तों के ऊपर सुधार है या बिगाड़? इसी प्रकार एक और बात लीजिए। कहते हैं कि वैदिक काल में मनुष्य जंगली थे। रहे होंगे। हमको आपेक्ष नहीं। सृष्टि के आरम्भ में जंगल बहुत थे। ऋषि लोग जंगलों मे ही रहते होंगे। भवन–निर्माण की व्यवस्था पीछे से हुई होगी जबकि वैदिक ज्ञान को कार्य में परिणत किया होगा। परन्तु जंगल में रहना पाप नहीं, जंगल–कानून (Law of Jungle) को बरतना पाप है। आज उच्च और गगनचुम्बी भवनों के रहने वाले भेड़ियों और चीतों की तरह एक–दूसरे के रक्त के प्यासे रहते हैं। वेद के आदर्श को देखिए–

**"अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं**
**जातमिवाघ्न्या"** (अथर्ववेद 3/30/1)

इस प्रकार एक–दूसरे के साथ व्यवहार करो जैसे गाय अपने नवजात बच्चे के साथ करती है। इतना उच्च आदर्श मानव–जाति के शैशव–काल में कैसे स्थापित हो सकता है जब तक कोई पूर्ण शक्ति उनका नेतृत्व न करे, और यदि वैदिक आदर्श इतना उच्च हो सकता है तो सृष्टि के आरम्भ से उसका होना उसके ईश्वरकृत होने का अकाट्य प्रमाण है।

यह संभव है कि आर्य जाति समय–समय पर इस आदर्श से गिर गई हो और उसने सन्मार्ग को छोड़कर ठोकरें खाई हों, परन्तु यह तो होगा मनुष्यों का दोष, उनकी निर्बलता, उनका स्वार्थ। इसमें वेदों का तो कोई दोष नहीं। श्री पं. जवाहरलाल जी ने शिकायत की है कि आर्य समाज और स्वामी दयानन्द उन सिद्धान्तों का परित्याग करना चाहते हैं जो सुधार के रूप में वेदों के पश्चात् हिन्दू सुधारकों की ओर से किए गए। परन्तु यदि विचार किया जाए तो प्रतीत होगा कि वह वैदिक सिद्धान्तों को उन्नतिशील नहीं, अपितु अवनतिशील बनाते हैं। उदाहरण के लिए, श्री शंकर स्वामी ने अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया। लोग समझते हैं कि वैदिक सिद्धान्तों का यह सुधार है। बौद्ध मत का खंडन करने के लिए संभव है यह कुछ लाभदायक ठहरा हो, परन्तु इस सिद्धान्त ने वैदिक धर्म की सजीवता नष्ट करके मायावाद का प्रचार कर दिया जो वैदिक ऋषियों को कभी अभीष्ट न था। इसी प्रकार हिन्दू जाति ने वैदिक धर्म की प्राचीन शुद्धता को छोड़कर अनेक नवीन बातें मिला दीं, जिनके कारण आज सनातन धर्म चूँ–चूँ का मुरब्बा हो गया है। यह सुधार नहीं अपितु बिगाड़ है। इसीलिए स्वामी दयानन्द ने कहा था कि 'वेदों की ओर लौटो' (Back to the vedas)। क्यों? इसलिए कि सन्मार्ग छोड़ आए। सीधा रास्ता पीछे रह गया। किस ओर चल रहे हो? वह अभीष्ट स्थान पर पहुँचानेवाला नहीं, अपितु दूर ले जानेवाला है! लौटो। लौटो!! जितनी जल्दी लौटोगे उतना ही अच्छा रहोगे। जिस मार्ग पर चल रहे हो उस पर एक कदम आगे बढ़ाना ही निर्दिष्ट स्थान से दूर होना है।

**प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' द्वारा सम्पादित**
**'गंगा ज्ञान सागर' से साभार**

# धर्म किसे कहते हैं?

● भद्रसेन

प्रगति चाहने वाले आज के अभिमन्यु रूपी युवकों के लिए वैचारिक स्तर पर जो पहला चक्रव्यूह बनाया जा रहा है– वह धर्म है। यह कैसे? '**धर्म विश्वस्य प्रतिष्ठा**' तै.आ. 10,62,1

धर्म शब्द धृ धातु से बनता है, जिस का **धार्यते, सैव्यते सुख–प्राप्यते यः स धर्मः यः धारयतिस धर्म**: जिसका सीधा सा भाव हैं, कि वे बातें, मान्यताएँ, कार्य व्यवहार धर्म है जिस के धारण, पालन अपनाने से जीवन का वह–वह रूप, कार्य टिका रहे, सुदृढ हो। जैसे कि आपस में अच्छे ढंग से बोलने पर वक्ता–श्रोता का व्यवहार टिका रहता है। वे *एक दूसरे से जुड़ कर सुख–स्नेह अनुभव* करते हैं, पर आँखें होकर बोलने से परस्पर अशान्ति, ईर्ष्या, द्वेष, झगड़ा ही होता है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने सही ढंग से बोलने अर्थात् सत्य–प्रिय वाणी को एक परखा हुआ धर्म कहा है? (**सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात, सत्यमप्रियम्। प्रियञ्च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ।। मनु. 4,138**) यही बात हम आपस के सम्बन्धों में देखते हैं। जब एक सम्बन्धी अपने सम्बन्ध के अनुरूप रिश्ते को निभाता है, तो दोनों का सम्बन्ध सुदृढ़ होता है और दोनों सुखी, प्रसन्न होते हैं। अतः धर्म–पुल (**धर्म एवं प्लवः महाभारत आरण्यक–32,32**) या नौका की तरह सहायक होकर जीवन यात्रा, कार्य–व्यवहार को सरल, सुखद बना देता है।

ऐसा सुखदायक धर्म आज सहायक होने के स्थान पर पीछे धकेलने वाला अधिक बना दिया गया है। यहाँ **पहली बात** तो यह है, कि धर्म एक न हो कर अनेक हैं। जिन पर परस्पर अनेक तरह –विरोध, खींचतान, धृणा, ईर्ष्या, द्वेष का व्यवहार चल रहा है। बात यहाँ तक जा पहुँची है, कि अपने धर्म वालों के लिए उस–उस धर्म को मानने मात्र से ही स्वर्ग, जन्नत आदि की प्राप्ति का विधान है, तो दूसरों के लिए नरक, दोज़ख़ आदि का निर्देश है। इस के साथ अपने से भिन्न धर्म वालों को म्लेच्छ, काफिर आदि शब्दों से निन्दित किया जाता हैं ऐसे वचन धर्मग्रन्थों में स्पष्ट रूप से मिलते हैं।

**दूसरी बात**– यह है, कि धर्म के भक्ति, पूजा–पाठ, तीर्थ, जप, तप, व्रत, पर्व जैसे एक से शब्द भी अलग–अलग रूप रखते हैं, जैसे कि प्रत्येक धर्म में ईश्वर भक्ति, इष्टभक्ति का सर्वप्रथम स्थान है। जिस से भक्त भगवान से जुड़कर दीपक की तरह प्रकाशमान हो जाए। पर आज ईश्वर, इष्टदेव के नाम पर एक लम्बी लाईन लग गई है। जबकि ईश्वर को मानने वाले सारे के सारे यह मानते हैं, कि इस दुनियाँ को बनाने–चलाने वाला ईश्वर ही है। सारे संसार में सूर्य, जल, वायु की एक ही व्यवस्था है। संसार के प्राकृतिक पदार्थ अन्न, फल, शरीर आदि सर्वत्र एक से ही हैं। अतः इन प्राकृतिक पदार्थों की एक रूपता और एक व्यवस्था से एक ही ईश्वर सिद्ध होता है। पुनरपि ईश्वर के नाम पर या ईश्वर के रूप में अनेक देवी–देवता, गुरु, अवतार, पीर, बाबा, माता, महापुरुष तथा मड़ी–मसान , वृक्ष आदि आए दिन नए–नए यहाँ जुड़ते जा रहे हैं। तब किस–किस को पूजें और किसी–किस को छोड़ें? क्योंकि हर एक की पूजा की सामग्री प्रक्रिया, व्रत, कथा, पर्व अलग–अलग हैं। एक समय में एक को ही अपनाया जा सकता है।

**तीसरी** सोचने वाली बात यह भी है, कि भक्ति, पूजा, व्यवहार बनते जा रहे हैं। कुछ ने दूसरों की जगह पूजा, भक्ति करने का धन्धा अपना लिया है और यह व्यापार 'हींग लगे न फिटकड़ी–रंग भी चोखा होय' के अनुसार बिना मूलधन के ही, यहाँ परिपाक पर अच्छा धन प्राप्त होता है और उस के साथ जहाँ वस्त्र, फल आदि अन्य पदार्थ भी प्राप्त होते हैं, वहाँ मान–सम्मान पूर्वक गुरु जैसा प्रतिष्ठित पद भी प्राप्त होता है।

यहाँ **चौथी** विचारणीय बात यह है, कि भक्ति, पूजा, प्रेरणा, हृदयशुद्धि, जीवन की पवित्रता (**धर्मस्य (भूषणं) निर्व्याजता–नीति 83–नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तस्सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम् महा. उद्योगत्र 35,49 – सत्यं न तद् यच्छल दोषयुक्तम् चाणक्य राजनीत शास्त्र 8,35**) का माध्यम न बन कर हर प्रकार की इच्छापूर्ति, पाप माफी जीवन की सफलता, उद्धार का साधन, जीवन का उद्देश्य बन चुकी है। तभी तो यह कहा जाता है– '**कलियुग नाम आधार, सो सुखी–जो नाम आधार, हरि नाम सिमर–बने तेरे बिगड़े काम**'।

ऐसा ही सच्चा–सुच्चा बनाने वाला धर्म केवल नाम स्मरण, पूजा–पाठ तक सीमित हो गया है। जीवन शुद्धि से उस का सम्बन्ध, वास्ता नहीं है। तभी तो भगत जी शब्द का भाव होशियार, भोला, ठग (बगुलाभक्त) हो गया है।

इस के साथ धर्म के तीर्थ यात्रा, देवदर्शन, जप, तप, स्मरण, ध्यान, स्नान, व्रत, कथा, पर्व आदि की आए दिन संख्या बढ़ती जाती है। तभी तो पत्र–पत्रिकाओं में प्रत्येक मास के प्रारंभ में उस–उस मास के व्रत, पर्व की सूचना छपती है। उस में कोई विरला दिन ही खाली होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति क्या–क्या करे? क्या–क्या न करे? जैसे कि हर दिन के अर्थात् सोम, मंगल या एकादशी आदि के व्रत, उपवास की अनोखी से अनोखी महिमा बताई जाती है। तब सब को मानने पर व्यक्ति प्रायः बिना खाए ही रहेगा। ऐसी स्थिति में व्यक्ति कुछ कार्य करने में समर्थ कैसे होगा?

आज धर्म के रूप में समझे जाने वाले तीर्थ व्रत, पर्व, पूजा–पाठ, नामस्मरण, जप–तप हर सिद्धि के साधक मान लिए गए हैं। तभी तो इन के समर्थन में सैंकड़ों कहानियाँ प्रचलित कर दी गई हैं। धर्म के इन रूपों को हर दोष का निवारक घोषित किया जाता है ओर ऐसी अनेक कहानियाँ शास्त्रों के वचन सुनाए जाते हैं।

**182 शालीमार नगर**
**होशियारपुर पंजाब**

---

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

# त्यागमयी देवियाँ

के मार्ग से शुम्भ और निशुम्भ नाम के दो राक्षसों ने बड़ी भारी सेना लेकर आर्यावर्त पर चढ़ाई की; ग्राम, नगर, बस्तियाँ जलाई जाने लगीं; प्रभु–भजन में मग्न जनता को पीड़ा पहुँचाई जाने लगी; अत्याचार होने लगा। आर्यावर्त के शूरवीर रणबाँकुरे क्षत्रियों ने राक्षसों को रोकने के लिए बलिदान देने शुरू किये। बड़े–बड़े योद्धा मारे गए। दधीचि ऋषि जैसे वृद्ध योगियों का रक्त भी गर्म हो उठा और उन्होंने भी अपनी बलि दे डाली। घोर संग्राम में आर्यावर्त की सेनाओं की पराजय होती चली गई।

यह अवस्था देखकर सब क्षत्रियों ने सम्मेलन किया और निश्चय हुआ कि शिव जी को बुलाना चाहिए। शिव जी को लेने के लिए योद्धा कैलास पर्वत पर पहुँचे तो क्या देखा कि शिव जी महाराज समाधि में लीन हैं। पार्वती ने योद्धाओं को सत्कार से आसन दिये, और दूध पिलाया। फिर पूछा, 'आपका आगमन किस प्रयोजन से हुआ है?'

योद्धाओं ने सब वृत्तान्त कह सुनाया। राक्षसों द्वारा आर्य–जनता की जो अवस्था की जा रही थी, सब वर्णन की। अत्याचारों की सारी कथाएँ सुनाईं। बड़े–बड़े योद्धाओं और राजाओं के मारे जाने के समाचार सुनाकर कहा, 'अब, जब कोई नेता या सरदार नहीं रहा, तो शिव जी महाराज के सिवाय और कोई रक्षक दिखाई नहीं दिया। अब यह निश्चय हुआ कि शिव जी महाराज की सेवा में उपस्थित होकर उनसे प्रार्थना की जाय कि वह क्षत्रियों का नेतृत्व करें और राक्षसी कष्ट से देश को बचाएँ।'

पार्वती ने सारा वृत्तान्त सुनकर कहा, '**निस्संदेह यह हमारा धर्म है कि देश–रक्षा के लिए अपना सब–कुछ बलिदान कर दें।** परन्तु शिव जी महाराज तो अभी समाधि में हैं और समाधि से उनको उठाने की मुझे आज्ञा नहीं है। यह कहना भी कठिन है कि वे समाधि से कब उठेंगे। महीनों तो क्या, वर्षों वे इसी अवस्था में रहते हैं और इधर देश भारी संकट में है। अब तो यही हो सकता है कि स्वयं रणक्षेत्र में चलूँ और शत्रु को आर्यावर्त से बाहर निकाल दूँ।'

योद्धाओं ने पार्वती की यह बात सुनी तो उनकी आँखें जल से पूर्ण हो गईं। एकबारगी वे सब कह उठे, 'धन्य हो माता पार्वती! जय हो! परन्तु आप...'

पार्वती ने कहा, 'जो तुम कहना चाहते हो, मेरे वीर पुत्रो! वह मैं जान गई। मेरे कोमल अंगों की चिन्ता न करो। मेरे नारी होने का भी विचार न करो। वेद भगवान् ने ऐसे समय ही के लिए आदेश दिया है कि –

**अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते।**
**गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां**
**कंचनोच्छिषः।।**
ऋ. 6।75।16।।

अर्थात् 'शस्त्रविशारद सशस्त्रा नारी! लपककर झपट जा और शत्रुओं पर टूट! उन शत्रुओं में से कोई भी शेष न रहे, बचकर जीवित न जाने पाये।'

और मुझे इस समय वही प्रेरणा हो रही है। सुनो, मेरी भुजाओं में प्रभु–कृपा से वह बल है कि शत्रु इसे देखकर काँप उठेगा। मेरे पिता ने मुझे सारी युद्ध–विद्या सिखलाई थी। महात्मा शिव जी ने योग सिखलाकर उसे और भी सफल बना दिया है। मेरा तीर खाली नहीं जाता। तुम अपने मन में से मेरे स्त्री होने का विचार निकाल दो। चलो मेरे वीर योद्धाओ, चलो! विलम्ब करना उचित नहीं।'

पार्वती ने अभी अपने शब्द समाप्त नहीं किये थे कि शिव जी के कितने ही सुयोग्य शिष्यों ने भी अपने तीर–कमान, भाले और शस्त्र सँभाल लिये। आश्रम की व्यवस्था करके और शिव जी महाराज की समाधि की ओर ध्यान रखने वाले नियत करके कैलास पर्वत के इस योग–आश्रम से पार्वती दुर्गा की भाँति खड्ग लेकर अपनी नन्ही–सी सेना के साथ चल पड़ी।

*क्रमशः*

# आह्वान महर्षि दयानन्द तपोभूमि छलेसर (अलीगढ़) का

**● देव नारायण भारद्वाज**

आज भी विद्यमान है जहाँ महर्षि की यज्ञवेदी” शीर्षक अपना लेख मई 1998 ई. में आर्य क्षेत्र की अनेकश: पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ था। यद्यपि उन आर्य संस्थाओं ने भी अपनी मुख–पत्रिकाओं में छापा था, जिनका दायित्व था कि वे लेख की अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए कोई योजना बनाएँ, किन्तु इस दिशा में उनकी कोई प्रतिक्रिया प्रदर्शित नहीं हुई, परन्तु स्वतन्त्र चेताओं ने उस लेख को गम्भीरता से लिया था, और स्वयं भी उस यज्ञ वेदी के अवलोकनार्थ यहाँ उपस्थित भी हुए थे। जहाँ पूज्य महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती ने छलेसर पहुँच कर यज्ञवेदी का परिभ्रमण किया था, वहीं उनके दीक्षा गुरु स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने कार्यारम्भ किए जाने पर प्रभूत आर्थिक सहयोग करने का संकेत भी दिया था। तत्कालीन जिला आर्य सभा के प्रधान स्व. श्री राजेन्द्र शर्मा ने प्रमुख राजनेताओं से लेकर सचिवालय तक दौड़–धूप की थी, किन्तु किसी न किसी तकनीकी बिन्दु पर आकर कारवाँ अटकता रहा।

हम अनेक लोग कभी सामूहिक यज्ञ अथवा कभी जन जागरण के लिए छलेसर से सम्पर्क बनाए रहे। प्रखर समाज सेवी लोक प्रिय श्री बाबू सिंह ने अपने पैतृक ग्राम काजिमपुर में सर्वहितकारी पुस्तकालय के उद्घाटन के लिए लेखक व उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपप्रधान डॉ. जयसिंह सरोज को ले जाने का कार्यक्रम बनाया। हम लोग सीधे उस ग्राम में न जाकर थोड़ा फेर से ग्राम छलेसर होते हुए वहाँ गए। छलेसर में बैठक करके अनेक लोगों से भेंट हुई, जिनमें महिला ग्राम–प्रधान के पति श्री कालीचरन भी उपस्थित हुए। अपने उक्त लेख की प्रति उन्हें दी गई। सभी उपस्थित लोगों ने अपने ग्राम के उज्ज्वल इतिहास को जानकर हर्ष अनुभव किया। फिर क्या था, लेख के अक्षर–बीजांकुर बन गए। लेख की प्रतियाँ ग्राम के प्रबुद्ध जनों एवं ग्राम सभा के सदस्यों में वितरित की गई। फलत: ग्राम सभा के अधिवेशन में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित पाठशाला की विस्तृत भूमि पर महर्षि दयानन्द तपो भूमि की स्थापना हो गई। डॉ. जयसिंह सरोज कृषि वैज्ञानिक के साथ–साथ आर्य प्रवक्ता विद्वान् भी हैं, उनकी प्रेरणा प्रभावी हुई। स्थानीय लेखपाल एवं उप जिलाधिकारी की स्वीकृति से लाखों रुपए की धन राशि व्यय करके स्थल की सीमा–दीवार खड़ी कर दी गई और द्वार भी खड़ा हो गया। इस अभियान में इं. लटूरी सिंह भी सहयोगी रहे हैं, इसीलिए उन्हें जिला आर्य सभा का संगठन मन्त्री बनाया गया है।, इसके प्रधान श्री रविकर आर्य एवं मन्त्री श्री राम किशन शर्मा ने 12 मई 2019 को म.द. तपोभूमि पर अपनी कार्यकारिणी बुलाकर अग्रिम कार्य योजना बनाने का निश्चय किया। गुरुकुल साधु आश्रम के प्राचार्य जीवन केसरी जी, पूर्व जिला मन्त्री भू देव मुनि जी एवं केतमुनि जी इस प्रकल्प के समर्थक बने। ग्राम प्रधान श्रीमती गुरजेश देवी आदि ने यहाँ पर दयानन्द कीर्ति स्तम्भ आदि की संकल्पना से अपने ग्राम को गौरवशाली बनाने का निश्चय किया है।

"महर्षि दयानन्द के ग्राम छलेसर प्रवास” का यदि संकलन किया जाए तो एक पुस्तक निर्मित हो सकती है। वे यहाँ पर चार बार पधारे और लम्बे समय तक रहे। यहीं आकर राजा जयकिशन दास जी डिप्टी कलेक्टर अलीगढ़ उनसे मिले, अलीगढ़, बुलाया, उनके उपदेशों की व्यवस्था की, और ग्रन्थ लेखन का अनुरोध किया, जो सत्यार्थ प्रकाश के नाम से प्रकाशित हुआ और होता चला आ रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन दिल्ली 2018 के महाकुम्भ में अल्प मूल्य में लाखों की संख्या में अब तक लोगों के हाथों में पहुँच चुका है। ग्राम छलेसर परिक्षेत्र के रईस ठा. मुकुन्द सिंह, ठा. मुन्ना सिंह एवं ठा. भूपाल सिंह के महर्षि दयानन्द के जीवन में जो प्राण–प्रखर–प्रसंग रहे हैं, वे जीवन चरित्र पाठकों को भाव द्रवित कर देते हैं। जैसे जन्म स्थली टंकारा, निर्वाण स्थली अजमेर को महान आर्यों ने विकसित किया है, दीक्षा स्थली मथुरा पर ध्यान दिया है, वैसे ही कर्णवास एवं छलेसर कर्म स्थली के विकास की आपसे अपेक्षा है। यह आपका योगदान ही आपका गौरवगान बन जाएगा।

**'वरेण्यम्' अवन्तिका –1**
**रामघाट मार्ग, अलीगढ़**

---

गतांक से आगे...

## आओ चलें,

# वैज्ञानिक धर्म एवं धार्मिक विज्ञान की ओर

**● आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक**

मेरे मित्र महानुभावो! मैंने अब तक तो वेद धर्म को सत्य धर्म की शर्तों पर स्वबुद्धि के अनुसार यथार्थ पाया है। इस कारण मैंने विचार किया है कि वैदिक वाङ्मय से विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को खोजकर आधुनिक वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये, वे उस पर प्रयोगशालाओं में अनुसंधान करें तो उन्हें जहाँ समय की बचत होगी वहीं उन्हें अनुसंधान हेतु नये–नये क्षेत्र प्राप्त हो सकेंगे। इसके साथ ही वैदिक विज्ञान की प्रमाणिकता भी उनकी दृष्टि में बढ़ेगी। मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि **वर्तमान विज्ञान कई बिन्दुओं पर अपने को असहाय अनुभव कर रहा है।** यदि कोई वेद के प्रति मेरी दृष्टि को मेरा पक्षपात माने तो उसे चाहिए कि वह जिसे अपना धर्म ग्रन्थ मानता है, उस पर गम्भीर अनुसंधान करके संसार के सम्मुख उसका सम्पूर्ण विज्ञान प्रकाशित करे। **मैं संकल्पित हूँ कि असहाय विज्ञान को वैदिक वैज्ञानिक रहस्यों के द्वारा नई दिशा प्रदान करूँ।**

मैं वेद को वर्तमान विज्ञान के पीछे नहीं बल्कि वर्तमान विज्ञान को वेद पीछे चलाने की भावना रखता हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं ऐसा कर पाऊंगा। इससे उसकी श्रद्धा वेद की अन्य विद्याओं (यथा अध्यात्म, सामाजिक, राजनैतिक सिद्धान्त, यज्ञ, योग, गो विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि) पर भी होगी। प्रबुद्धजनों को इस बात का भी अनुभव होगा कि वेद व वैदिक साहित्य किसी देश या वर्ग के लिए ही नहीं अपितु विज्ञानादि की भाँति समस्त सृष्टि के लिए हितकारी हैं। **संसार को धीरे–धीरे इस बात का भी ज्ञान होगा कि वेद किसी देश व वर्ग विशेष की सम्पदा नहीं बल्कि सभी मानवों की साझा सम्पत्ति है।** वेद उस काल का है, जब हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, ताओ, यहूदी, साम्यवादी, नास्तिक आदि वर्ग बने भी नहीं थे। तब समस्त भूमण्डल पर सभी केवल मानव ही कहलाते थे। उस समय देशों का प्रादुर्भाव भी वर्तमान रूप में नहीं हुआ था। **यह वेद ही समस्त ज्ञान–विज्ञान का मूल है, ऐसा जिस दिन सिद्ध हो जायेगा तो मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि कोई प्रबुद्ध मानव इसे स्वीकार न करे। इससे बहुत आगे चल कर मैं वैदिक ऋचाओं को सृष्टि प्रक्रिया में उत्पन्न सूक्ष्म कम्पन (ऊर्जा) के रूप में सिद्ध कर सकूंगा।**

मेरे बन्धुवर! जिस बात को मैं यहाँ कह रहा हूँ उसे सिद्ध करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मेरा जीवन विश्व भर के प्राणिमात्र के समग्र हित चिन्तन के लिए है, न कि किसी मत पंथ का प्रचार करना मेरा प्रयोजन है। इसके लिए मैं धर्म व विज्ञान दोनों को परस्पर मिलाने के प्रयत्न का दृढ़ व्रती हूँ। विज्ञान से तात्पर्य सर्वत्र तकनीकी ज्ञान भी मैं ग्रहण नहीं करता। मैं समझता हूँ कि **बेरोक व अनावश्यक तकनीक मानव को आलसी, भोगवादी, गलाकाट–प्रतिस्पर्धी, अशांत व संघर्ष प्रिय बनाती है। मेरा ध्येय सृष्टि के गम्भीर व सूक्ष्म रहस्यों को जानकर महती चेतना परमात्मा की ओर वर्तमान विज्ञान को उन्मुख करना है। इससे मानव में आस्तिकता, दयाभाव, प्रेम, न्याय, सत्य आदि गुणों का उदय होगा। वह निरंकुश व स्वेच्छाचारी नहीं बनकर परमात्मा के आधीन चलेगा।**

इसी क्रम में परमाणु– नाभिकीय –

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

# बड़ोदरा नरेश श्रीमान् महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ (1863–1939 ई.) का प्रेरक वक्तव्य

● भावेश मेरजा

वक्तव्य के प्रमुख बिन्दु –

- जो धर्म समाज का हित करता है वह आदरणीय होता है।
- जहाँ बुद्धि का प्रमाण नहीं माना जाता उस धर्म को प्रजा मान्य नहीं करती।
- आज जिसे हम हिन्दू धर्म मानते हैं वह वस्तुतः हिन्दू धर्म नहीं।
- वैदिक काल में हमारे धर्म में मूर्तिपूजा नहीं थी।
- आत्म समर्पण बिना समाज सेवा नहीं होती।
- धर्म निमित्त हमारे देश में बहुत धन *व्यय होता है, परन्तु उसका फल कुछ* नहीं।
- ठीक पूछिए तो धर्माचार्य भी पुलिस की तरह प्रजा के नौकर हैं।
- शास्त्रों में बहुत–सी उत्तम बातें हैं, परन्तु बिना विचारे **'बाबा वाक्यं प्रमाणं'** के न्यायानुसार नहीं चलना चाहिए।

श्री पण्डित श्रीराम शर्मा (बड़ौदा के प्रशिक्षण महाविद्यालय में तत्कालीन हिन्दी अध्यापक) द्वारा लिखित तथा श्री भगवद्दत्त शर्मा, कारेली बाग, बड़ौदा द्वारा (सम्भवतयाः 1915 ई. में) प्रकाशित हिन्दी पुस्तक **'सयाजी चरितामृत'** के प्रथम संस्करण में पृ. 82 पर लिखा है –

"इसी (1911 ई.) वर्ष 26 फरवरी को आप (अर्थात् बड़ोदरा नरेश श्री महाराजा सयाजीराव गायकवाड़) बम्बई प्रान्त की आर्य धर्म परिषद् में परिषद् के सभ्यों के आग्रह पर पधारे और सभापति के आसन को ग्रहण कर एक महत्त्वपूर्ण, समयोचित, प्रभावशालिनी वक्तृता दी, जिसका उपस्थित जनों पर अकथनीय प्रभाव पड़ा। रणोली बड़ौदा के निकट ही राज्य का एक ग्राम है।"

इसी **'सयाजी चरितामृत'** पुस्तक में आगे पृ. 158–161 पर बड़ोदरा नरेश श्री महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ की उपर्युक्त वक्तृता के कतिपय निम्नलिखित अंश दिए गए हैं –

"जो धर्म मनुष्य समाज की स्थिति उच्चतम नहीं करता और अज्ञान नहीं हटाता वह धर्म जन समाज में कभी आदर नहीं पाता। जो धर्म समाज का हित करता है वह आदरणीय होता है। धर्म ईश्वर कृत है अथवा मनुष्य कृत इस विषय की चर्चा करना व्यर्थ है। कुछ भी हो, उसकी आवश्यकता महती है। किन्तु वह ऐसी वस्तु नहीं कि एकदम स्वेच्छानुसार बदल दी जाए। वह सैंकड़ों वर्षो का परिणाम है और उसके बदलने में भी सदियाँ हो जाती हैं। धर्म यह कुछ अपना वस्त्र नहीं जो हम इच्छानुसार उसको बदल लेवें और जैसा चाहें वैसा लें। मुझे कहना चाहिए कि अपना धर्म स्वीकार करने से प्रथम विचार करना चाहिए।

जहाँ बुद्धि का प्रमाण नहीं माना जाता उस धर्म को प्रजा मान्य नहीं करती। यहाँ मैं भिन्न–भिन्न धर्मों के सारासार की तुलना नहीं करता। हिन्दू धर्म यह आज का विषय है, इसलिए इतना ही कहूँगा, आज जिसे हम हिन्दू धर्म मानते हैं वह वस्तुतः हिन्दू धर्म नहीं। आज का हमारा धर्म हमारे मूल वेद धर्म से विकृत होकर अनेक प्रकार से बदल गया है।

हम इस समय विकृत धर्म को वास्तविक धर्म मान रहे हैं, जिसका कारण हमारा अज्ञान ही है।

आर्य समाज मेरे विचार में वेदिज़्म (Vedism) –`वेद धर्म का अवलम्बन करने वाली संस्था है। मुझे कहना चाहिए कि वह वैदिक धर्म कालान्तर में अनेक प्रकार से विकृति को प्राप्त हुआ है, उस समय का धर्म उस समय के सांसारिक और राज्य के जीवन का यथार्थ चित्र खींचता है।

वैदिक काल में हमारे धर्म में मूर्तिपूजा नहीं थी तथा पशुयज्ञादि कुछ क्रियाएँ नहीं थीं। पीछे से ब्राह्मणों ने यज्ञ में पशुओं का होम करना आरम्भ किया। धर्म के नाम पर पशु, प्राणी और कभी–कभी मनुष्यों का भी वध होने लगा और तद्नुसार धर्म के निमित्त जीव हत्या प्रविष्ट हुई। बकरे, भैंसे आदि का वध करना देश सेवा और पुण्य समझा जाने लगा। ऐसी स्थिति कई सदियों तक रहने पर कुछ बुद्धिमान् लोगों में विचार जागृति हुई कि पशु–प्राणियों के वध करने की अपेक्षा आत्म समर्पण में ही पुण्य है। आत्म समर्पण बिना समाज सेवा नहीं होती और समाज सेवा बिना वास्तविक उन्नति नहीं होती। सद्–वर्तन, शान्ति और इन विचारों का प्रचार करने के लिए महात्मा बुद्ध ने जन्म धारण किया जिन्होंने बाह्य शुद्धि की अपेक्षा आन्तर्य (आन्तरिक) शुद्धि की आवश्यकता पर विशेष उपदेश देकर लोगों को सिद्धान्त पर चलाया और संसार की उन्नति के लिए भारी प्रयास किया। सज्जनो! मुझे कहना चाहिए कि चाहे जैसे बड़े सुधार हो और उसके लिये बड़े बड़े कार्य किए जाएँ, परन्तु जब तक प्रजा के नेता और महान् नर उसके अनुमोदक और सहायक नहीं होते तब तक वह कार्य नहीं चल सकते। (हियर हियर [सुनिए–सुनिए] की ध्वनि) हमारे हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में भी ऐसा ही हुआ। प्रजा को सहायता नहीं मिली और वह स्थिति फिर बदली अज्ञानता और भ्रमों ने घर घेरना आरम्भ किया, उससे परिणाम क्या हुआ? हिन्द के चित्र की ओर ऐतिहासिक दृष्टि डालो। हिन्द में राजकीय द्वेष हुआ। धार्मिक अवनति हुई और सामाजिक स्थिति छिन्न–भिन्न हो गई। प्रजा के बड़े भाग ने पुरुषार्थ खोया और नपुंसकों की तरह दैववादी हुए। प्रयत्न करने की शक्ति गई और कार्यसिद्धि के लिए ईश्वर की सहायता निमित्त नाम की भक्ति और मिथ्या निवृत्ति बढ़ी। ऐसी शोकजनक स्थिति हुई है। आपको जानना चाहिए कि ईश्वरीय नियम सदा एक से ही हैं। ...

ईश्वरीय नियमानुसार वर्तन करना और जगत् के विकास में आगे बढ़ना हमारा कर्तव्य है (करतल ध्वनि) मैं जानता हूँ कि हमारी शक्ति परिमित अर्थात् सीमा वाली है, परन्तु वह सीमा कहाँ तक है – यह कहना अति कठिन है। यदि बुद्धि और शक्ति की सीमा मानते होते तो वर्तमान जगत् सीनेमेटोग्राफ, वायुयान, बिना तार के तार आदि जो हमको आवश्यक मालूम होते हैं, वह साधन कहाँ से उत्पन्न होते? (करतल ध्वनि) यह सिद्ध कर सकते हैं कि मानवी शक्ति की सीमा नहीं। परिश्रम और बुद्धि से प्रत्येक मनुष्य कार्यसिद्धि कर सकता है। आप केवल हाथ जोड़ कर इच्छा और याचना करने की अपेक्षा दृढ़ श्रद्धा से निरन्तर यत्नशील रहेंगे तो अपनी स्थिति में बहुत सुधार और वृद्धि कर सकेंगे।

धर्म निमित्त हमारे देश में बहुत धन व्यय होता है, परन्तु उसका फल कुछ नहीं। कथा पुराण आदि हम लोग श्रद्धा से सुनते हैं, परन्तु Why and Wherefore अर्थात् 'क्यों और किस लिए' आदि प्रश्नों से स्वयं बुद्धि का उपयोग नहीं करते। यह शोक की बात है। हमारे धर्माचार्य और महन्त इस विषय पर क्यों न ध्यान दें? प्रजा की धार्मिक स्थिति पर दृष्टि डालना उनका कर्तव्य है। अतएव महन्त और पुजारी आदि धर्माचार्यों की स्थिति सुधारने के लिए मैंने अपने राज्य में धारा नियत की है।... ठीक पूछिए तो धर्माचार्य भी पुलिस की तरह प्रजा के नौकर हैं।"

दूसरी वक्तृता में श्री. महाराज ने अपने श्रीमुख से वर्णन किया –

"सज्जनो ! कितने ही ऐसा समझते होंगे कि महाराज विलायत हो आए हैं इसलिए सबको भ्रष्ट करने का विचार रखते हैं। ('नहीं नहीं' का शब्द) मैं कहूँगा कि – 'मैं चुस्त हिन्दू हूँ' और हिन्दू धर्म के प्रति मेरा जितना वास्तविक अभिमान थोड़ों ही को होगा। (करतल ध्वनि)... आप जिन रीतियों को धर्म मानते हैं उन सबको मैं अन्ध श्रद्धा से मानने कि लिए तैयार नहीं। ईश्वर का पारितोषिक (Reason) विचार शक्ति छोड़ने के लिए मैं तैयार नहीं। अन्त में आपको यही बोध देता हूं कि शास्त्रों में बहुत–सी उत्तम बातें हैं, परन्तु बिना विचारे **'बाबा वाक्यं प्रमाणं'** के न्यायानुसार नहीं चलना चाहिए।"

**(संकलन एवं प्रस्तुति : भावेश मेरजा, 8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच (गुजरात) – टाउनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच (गुजरात) – 392015, मो. 9879528247**

---

☞ पृष्ठ 06 का शेष

## वैज्ञानिक धर्म एवं ...

कण – ब्रह्माण्ड – भौतिकी के गूढ़ तत्वों को वैदिक वाङ्मय से खोजना साथ–साथ आधुनिक विज्ञान की अवधारणाओं को समझना मेरी रुचि के विषय हैं। मेरी दृष्टि में उपर्युक्त विषय विज्ञान के सूक्ष्मतम विषय हैं, अन्य सभी विज्ञान इनसे किसी न किसी प्रकार जुड़े हुए हैं। मेरा दृढ़ मत है कि उपर्युक्त विषयों में आधुनिक विज्ञान, वैदिक विज्ञान से अनेकत्र नयी दिशा प्राप्त कर सकता है। बल, ऊर्जा व द्रव्यमान के रहस्यों को समझना भी इसी क्षेत्र का विषय होगा। इसके आगे अनेक उपयोगी तकनीकी विषय भी अनायास ही प्राप्त हो सकेंगे, ऐसी मैं सम्भावना करता हूँ। **आधुनिक विज्ञान उपर्युक्त विषयों में क्या–क्या भूल रहा है? तथा वर्तमान व मध्यकालीन वैदिकों ने क्या–क्या भूलें वैदिक ज्ञान को समझने में की हैं, इसका भी पूर्ण अनुमान मेरे मस्तिष्क में हो रहा है, ऐसा विश्वास है।**

मुझे इस दिशा में कार्य करते लगभग दस वर्ष ही व्यतीत हुये हैं। मैंने भारत के कई विश्व स्तरीय भौतिक वैज्ञानिकों की पर्याप्त संगति की है। विश्वभर में सृष्टि विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति से भी निरन्तर अवगत होता रहता हूँ। उच्चस्तरीय वैज्ञानिक साहित्य भी पढ़ा है। सार यह है कि वर्तमान विज्ञान अनेकत्र उलझनों में फँसा है, अनेकत्र असहाय प्रतीत होता है। उस असहाय व उलझे वर्तमान विज्ञान को सहायता देना मेरा उद्देश्य है।

**वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम**
**भीनमाल, जिला–जालोर (राजस्थान)**
**पिन–343029**
**दूरभाष– 09414182173, 02969292103**

# माता–पिता और आचार्य

● कु. कंचन आर्या

**प्र. 1. आचार्य किसे कहते हैं?**

उ. जो विद्यार्थी को धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षापूर्वक विद्या देने के लिए तन, मन और धन से अत्यन्त प्रेमपूर्वक प्रयत्न करे, उसको आचार्य कहते हैं

**प्र. 2. मनुष्य का जीवन किससे उत्तम बनता है?**

उ. मनुष्य का जीवन **माता–पिता और आचार्य की शिक्षा से** उत्तम बनता है।

**प्र. 3. किस मनुष्य को सौभाग्यशाली मानना चाहिए?**

उ. जिस मनुष्य का जन्म धार्मिक विद्वान् माता, पिता के घर और विद्या भी धार्मिक विद्वान् आचार्य से प्राप्त हो, उस मनुष्य को सौभाग्यशाली मानना चाहिए।

**प्र. 4. माता और पिता द्वारा अपने बच्चों को कितने वर्ष की आयु तक शिक्षा प्रदान करने का विधान है?**

उ. जन्म से लेकर पाँच अथवा आठ वर्ष की आयु तक।

**प्र. 5. इस पाँच या आठ वर्ष की छोटी–सी आयु तक माता–पिता बच्चों को क्या शिक्षा प्रदान करेंगे?**

उ. यह छोटी आयु ही मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन की नींव होती है। इस अवस्था में माता–पिता अपनी संतान को अच्छी भाषा बोलने; खान–पान, उठने–बैठने और वस्त्रधारण करने की रीति; माता–पिता आदि बड़ों का सम्मान करने, बड़ों के सामने मनमर्जी का व्यवहार न करने; शिष्टाचार के विरुद्ध आचरण न करने आदि की शिक्षा प्रतिदिन दे सकते हैं। जैसे–जैसे उनका शारीरिक और बौद्धिक सामर्थ्य बढ़ता जाता है, उसके अनुसार अच्छी–अच्छी बातें सिखाई जा सकती हैं।

**प्र. 6. पाँच या आठ वर्ष की आयु के पश्चात् बच्चों को शिक्षा कौन प्रदान करेगा?**

उ. आचार्य।

**प्र. 7. क्या तब माता–पिता बच्चों को शिक्षा नहीं दे सकते?**

उ. हमारी प्राचीन वैदिक व्यवस्था के अनुसार महर्षि का मन्तव्य था कि पाँच या आठ वर्ष की आयु के पश्चात् कोई बच्चा घर में नहीं रहना चाहिए। शिक्षा प्राप्ति के लिए उनका गुरुकुलों में जाना आवश्यक है। अतः वहाँ आचार्य ही शिक्षा प्रदान करेगा, माता–पिता नहीं।

दूसरा, सभी माता–पिता का आचरण और योग्यता इतनी नहीं होती कि वे अपनी संतान को उचित शिक्षा प्रदान कर सकें। इसके अतिरिक्त मोह और लाड़ के कारण माता–पिता बच्चों को उचित अनुशासन में नहीं रख पाते। अतः आचार्य द्वारा शिक्षा दिलवानी आवश्यक है।

**प्र. 8. यदि गुरुकुल में न भेजकर घर में रहकर ही शिक्षा प्रदान करवाई जाए, तो क्या हानि है?**

उ. गुरुकुल का वातावरण अनुशासित और नियमित होता है। वहाँ माता–पिता से दूर रह कर बच्चा उसी वातावरण में तप व त्यागपूर्वक विद्यार्जन कर सकता है। धनी–निर्धन सभी परिवारों के बच्चे ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर समानता का व्यवहार करते हुए ही योग्यता प्राप्त करते हैं। बाहर के वातावरण से दूर रहने के कारण वे संसार के आकर्षणों और बुराइयों से अप्रभावित रहकर गुणों का अर्जन कर सकते हैं।

इसके विपरीत, घरेलू वातावरण में बच्चा तप व त्याग से दूर रहता हुआ पूर्णतः अनुशासित और नियमित नहीं रह पाता। वह विद्यार्जन की अपेक्षा संसार के दूसरे आकर्षणों में उलझ जाता है। उसके आचरण एवं विचारों पर बाहरी वातावरण का प्रभाव अधिक पड़ता है। किसी तरह वह किताबी शिक्षा प्राप्त कर भी ले, परन्तु उसका आचरण और आदतें शुद्ध नहीं रहते। जो माता–पिता बचपन में अपनी सन्तान को अच्छे संस्कार देते भी हैं, वे भी बाहरी वातावरण के प्रभाव से दब जाते हैं और वह बच्चा संसार के बहाव में बहकर जीवन का वास्तविक उद्देश्य भूल जाता है। आज के बच्चों की उद्दण्डता, अशिष्टता, दुराचरण आदि बुरी आदतें इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

**प्र. 9.** (आजकल तो माता–पिता आदि मनोरंजन के लिए उल्टा–सीधा सिखाते रहते हैं। महर्षि इस विषय में प्रश्न उठाकर कह रहे हैं।) **क्या माता–पिता जैसी चाहें वैसी शिक्षा करें?**

उ. नहीं। जैसी चाहें वैसी शिक्षा नहीं करनी चाहिए। (उनके अनुसार, बुरी शिक्षा देने वाले माता–पिता और आचार्य को माता–पिता और आचार्य समझना ही नहीं चाहिए।)

**प्र. 10 महर्षि ने कुशिक्षा के कौन–से उदाहरण दिए हैं?**

उ. सुन मेरे बेटे, बेटी और विद्यार्थी! तेरा शीघ्र विवाह करेंगे, तू इसकी डाढ़ी मूँछ पकड़ ले, इसकी जटा पकड़ के ओढ़नी फेंक दे, धौल मार, गाली दे, इसका कपड़ा छीन ले, पगड़ी व टोपी फेंक दे, खेल, कूद, हँस, रो, तुम्हारे विवाह में फुलवारी निकालेंगे इत्यादि। ये सब कुशिक्षा के उदाहरण हैं। (जबकि आजकल के माता–पिता अपने छोटे बच्चों को इसी प्रकार की क्रियाएँ करवा कर खुश होते हैं तथा घर में आए हुए मेहमानों को दिखाने के लिए भी उकसाते हैं। इस प्रकार वे अपना एवं औरों का मनोरंजन करते हैं।)

**प्र. 11 ऐसे माता–पिता और आचार्य को महर्षि ने क्या कहा है?**

उ. उनके अनुसार ऐसे माता–पिता और आचार्य को माता–पिता और आचार्य न समझना चाहिए, किन्तु संतान और शिष्यों के पक्के शत्रु और दुःखदायक मानना चाहिए।

**प्र. 12. ऐसे माता–पिता आचार्य को शत्रु और दुःखदायक क्यों कहा है?**

उ. क्योंकि इस प्रकार के माता–पिता और आचार्य बच्चों में बुरी आदतें डालने में सहायक बनते हैं। यदि बुरा या गलत कर्म करने पर भी बच्चों को डाँटा या दण्डित नहीं किया जाएगा, तो बच्चे अच्छे–बुरे कार्य में अन्तर ही नहीं समझ पाएँगे। परिणामतः उन्हें गलत कार्य करने की आदत पड़ जाएगी, जिसके कारण जीवन में वे अशिष्ट और असभ्य कहलाएँगे तथा दुःखी होंगे। विवाह आदि के विचार देने से उनके अन्दर उसके प्रति आकर्षण पैदा होगा और वे पढ़ने–लिखने में मन नहीं लगा पाएँगे।

**प्र. 13. महर्षि के अनुसार कैसे माता–पिता और आचार्य असल में माता–पिता और आचार्य कहलवाने और धन्यवाद के पात्र नहीं हो सकते?**

उ. महर्षि के अनुसार, निम्नलिखित माता–पिता, आचार्य असल में माता, पिता और आचार्य कहाकर धन्यवाद के पात्र कभी नहीं हो सकते :–

(1) जो बच्चों को अपने सामने जो चाहे बोलने, निर्लज्जता के कार्य करने, व्यर्थ चेष्टा आदि बुरे कर्मों से हटाकर विद्या की प्राप्ति आदि शुभ गुणों को अपनाने के लिए नहीं समझाते, तथा

(2) अपना तन, मन तथा धन लगाकर उन्हें उत्तम विद्या–प्राप्ति और उत्तम व्यवहार का आचरण करवा कर अपने सन्तानों का हित नहीं करते।

**प्र. 14. असली माता–पिता और आचार्य कौन कहलाते हैं?**

उ. निम्नलिखित गुणों से युक्त ही असली माता–पिता और आचार्य कहलाने के योग्य हैं:–

(1) जो अपनी सन्तानों और शिष्यों को ईश्वर की उपासना, धर्म, अधर्म, प्रमाण, प्रमेय, सत्य, असत्य (मिथ्या), पाखण्ड, वेद, शास्त्र आदि के लक्षण और उनके स्वरूप का ठीक–ठीक ज्ञान प्रदान करते हैं,

(2) उनकी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार वेद–शास्त्रों के वचन स्मरण करवा देते हैं, तथा

(3) विद्या पढ़ने और आचार्य के अनुकूल रहने व व्यवहार करने की रीति सिखा देते हैं, जिससे वे बिना किसी बाधा के विद्या की प्राप्ति कर सकें।

**'व्यवहार भानु प्रश्नोत्तरी' से साभार**

---

# डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर

● शिव नारायण उपाध्याय

डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर का जन्म 1894 ई. में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर में हुई। उन्होंने अपनी शिक्षा पी.सी. राय के शिष्य A.C.Ghosh के निर्देशन में की। इस प्रकार वह पी.सी. राय के शिष्य के शिष्य थे। वे अपने को पी.सी. का Grand Pupil कहते थे। पंजाब विश्व विद्यालय के फोरमेन क्रिश्चियन कॉलेज से उन्होंने रसायन शास्त्र में M.Sc. की उपाधि प्राप्त की। फिर सन् 1919 में वे इंग्लैण्ड चले गए और लन्दन विश्व विद्यालय के कॉलेज में प्रोफेसर एफ.जी. डोनन के नीचे कार्य करने लगे। सन् 1921में उन्होंने Emulsions विषय पर D.Sc. की पदवी (उपाधि) प्राप्त की। फिर वे भारत लौट आए और बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हो गए। इससे पूर्व उन्होंने कुछ समय तक कैंसर बिल्हेलम संस्था बर्लिन में भी काम किया था। फिर सन् 1924 ई. में डॉ. भटनागर को पंजाब विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय प्रोफेसर फिजिकल केमिस्ट्री एवं निदेशक विश्वविद्यालय रसायन शास्त्र प्रयोग शालाएँ लाहौर हेतु आमंत्रित किया जिसे उन्होंने स्वीकार किया। वे यहाँ पर 16 वर्ष तक रहे। यह काल वहाँ तीव्र शोध कार्य माना गया कोलाइड्स, सरफेस, केमिस्ट्री, फोटो केमिस्ट्री के क्षेत्र में डॉ. भटनागर तथा उनके शिष्यों ने बड़ा काम किया। सन् 1926 में ही डॉ. भटनागर और उनके शिष्यों ने मेग्नेटो–केमिस्ट्री के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया। इस क्षेत्र के वे नेता माने गए। वास्तव में डॉ. भटनागर ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। जब सन् 1939 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ तब भारत सरकार को डॉ. भटनागर की वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्र में शोध के लिए निदेशक के पद पर सेवा की आवश्यकता हुई। उन्होंने आमंत्रण स्वीकार किया और सरकार की अपेक्षाओं को पूर्ण किया। यद्यपि उन्हें प्रशासनिक एवं सलाहकार के भारी कर्तव्यों के भार के साथ

**शेष पृष्ठ 09 पर ☞**

# दैनिक जीवन में अग्निहोत्र

## ● डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री

सनातन प्राचीन आर्य वैदिक संस्कृति के अनुसार नित्यकर्म बतलाये गये हैं जिन्हें सभी गृहस्थ, प्रतिदिन किया करें, धनी हो या निर्धन, बड़ा हो या छोटा, प्रत्येक के लिए आवश्यक होने से उन नित्य यज्ञों का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। वे मनुष्यमात्र के समान कर्म हैं, इसलिए उन्हें महायज्ञ कहते हैं। भगवान मनु ने इन पाँच यज्ञों का अनुष्ठान नित्य एवं आवश्यक बतलाया है–

**ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।**
**नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिर्न हापयेत्।।**

मनु. 4/22

जहाँ तक हो सके (**ऋषियज्ञं**) ब्रह्मयज्ञ (**देवयज्ञ**) देवयज्ञ (**भूतयज्ञं**) बलिवैश्वदेवयज्ञ (**नृयज्ञं**) अतिथि यज्ञ और (**पतृयज्ञं**) पितृयज्ञ को (**न**) नहीं (**हापयेत्**) छोड़े।

*महाभारत वेदव्यास जी के उपदेश* अनुसार–

**अहन्यहति ये त्वेतानकृत्वा भु ते स्वयम्।**
**केवलं मलमश्नन्ति ते नरा न च**
**संशयः।**

महाभारत अश्व 104/16

(**अहन्यहनि**) प्रतिदिन ये जो (**एतान्**) इन महायज्ञों को (**अकृत्वा**) किये बिना स्वयं (**भु जते**) खाते पीते हैं, (**ते**) वे (**नराः**) नर (**केवलं**) केवल (**मलं**) मल खाते हैं (**च**) वस्तुतः इसमें (**संशयः**) संशय नहीं है।

आइये! पंच महायज्ञ पर क्रमशः विचार करते हैं। सबसे प्रथम है **ब्रह्मयज्ञ**–प्रतिदिन प्रातः तथा सायंकाल प्रभु के चरणों में उपस्थित होकर, अपने विनय तथा प्रेम का प्रकाश करना और परमपिता के गुणों की आराधना करना ब्रह्मयज्ञ का एक भाग है।

स्वाध्याय अर्थात् मोक्षशास्त्रों का अध्ययन करना दूसरा भाग है। शास्त्रों को पढ़ने तथा उनकी बातों पर आचरण करने से उनकी सच्चाई का अनुभव होता है और धर्म में श्रद्धा बढ़ती है। मनुस्मृतिकार कहते हैं–

**यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं**
**समधिगच्छति।**
**तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य**
**रोचते।।**

मनु. 4/20

(**यथा यथा**) ज्यों ज्यों पुरुष शास्त्र को (**समधिगच्छति**) समझता जाता है (**तथा तथा**) त्यों त्यों (**विजानति**) विशेष जाना जाता है और उसको रुचिकर होता है। स्वाध्याय करने वाला आत्मा के स्वरूप से भलीभाँति परिचित होकर ठीक–ठीक चिन्तन करना सीख जाता है। सन्ध्योपासना–योग द्वारा आत्मिक मर्मों के मनन का अभ्यास हो जाता है। जब स्वाध्याय तथा भक्तियोग दोनों में सम्पन्न हो जाता है, तो प्रभु के प्रकाश का पात्र बनता है।

**देवयज्ञ** : इस प्रकार ब्रह्म अर्थात् ईश्वर और वेद के सत्संग से पवित्र होकर मनुष्य को चाहिये कि देवताओं का सत्संग करें। देव का अर्थ परमात्मा है। प्राकृतिक ज्योतियों, शक्तियों और विभूतियों को भी देव कहते हैं। विद्वान जनों को भी देव कहते हैं। साधक को उचित है कि ब्रह्मयज्ञ में विशेष रूप से प्रभु के आन्तरिक प्रकाश को देखने के लिये उत्सुक होकर अन्तर्मुख होने का अभ्यास करें। देवयज्ञ में उसकी बाह्य विभूतियों और चमत्कारों का ध्यान करता हुआ, उसके विराट स्वरूप का चिन्तन करें।

**पितृयज्ञ** : प्रतिदिन अपने माता–पिता, आचार्य, गुरुजन तथा अन्य आश्रित सम्बन्धियों की सेवा तथा तृप्ति का ठीक–ठीक प्रबन्ध करना ही इस यज्ञ का तात्पर्य है। माता–पिता अपने सन्तान के लिये जो–जो कष्ट उठाते और अपना आराम छोड़कर अपने बच्चों के लिए जो कुछ करते हैं, उसका ऋण चुका सकना असम्भव है। अतः अपने वृद्ध, माता–पिता सबके प्रति सन्तान अपने कर्तव्य का पालन करें।

**अतिथियज्ञ** : यह चौथा महायज्ञ वहीं हो सकता है जहाँ पितृयज्ञ की प्रतिष्ठा हो। जब कोई विद्वान, सदाचारी, सन्यासी, महात्मा, अनुभवी सज्जन हमारे घर आ पहुँचे तो हमारा द्वार उसके स्वागत करने के लिए सदा खुला रहना चाहिए।

**बलिवैश्वदेवयज्ञ** : पाँचों महायज्ञों द्वारा प्राणिमात्र से सहानुभूति प्रकट करने का उपदेश है। ब्रह्मयज्ञ में महान् प्रभु का ध्यान कर, साधक महान् बनना चाहता है। क्योंकि जिस प्रकार के संकल्पमय आदर्श हमारे सम्मुख होते हैं, हम वैसे ही ढ़लते जाते हैं। देवयज्ञ में वह भौतिक देवताओं में प्रभु की ज्योति को अनुभव करता हुआ, उनके समान उपकारी बनने का यत्न करता है। पितृयज्ञ पारिवारिक एकता को बढ़ाने वाला है। अतिथियज्ञ जातीय प्रेम तथा संगठन का अभ्यास क्षेत्र है और अन्त में सब संकोच का त्याग सिखाने के लिए भूतयज्ञ आता है। जैसे ब्रह्म सबके हृदय में निवास करता है, ऐसे ही साधक भी प्राणिमात्र के हृदय में प्रविष्ट होकर उस ब्रह्म का अनुभव प्राप्त करें। किसी के हृदय में निवास करना हो तो उसके साथ सच्चा प्रेम और उसकी सदा सहायता करनी चाहिए।

**एस.जी.एन.डी. खालसा कॉलेज,**
**दिल्ली विश्वविद्यालय**
**मो. 9999426474**

---

☞ *पृष्ठ 08 का शेष*

# डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर

काम करना पड़ा। फिर भी डॉ. भटनागर ने शोध कार्य में रुचि ली और उनके स्वयं के तथा उनके स्टॉफ के द्वारा शोध के साथ कई और महत्त्वपूर्ण समस्याओं का निराकरण किया गया। उन्होंने Anti Gas Cloth और वारनिश एयर फोम सोलूशन, वेजीटेबल ऑयल, ब्लेण्ड्स, इंधन, नहीं फूटने वाले कन्टेनर, ग्लास सब्स्टीट्यूट्स आदि भारतीय व्यर्थ सामग्री (कचरा) से बनाए। डॉ. भटनागर को कई पारितोषिक भी प्राप्त हुए। सन् 1936 में भारत सरकार ने उन्हें O.B.E. की पदवी दी। सन् 1941 में उन्हें Sir की उपाधि से सम्मानित किया गया। सन् 1943 ई. में लन्दन की केमिकल सोसायटी ने उन्हें अपना सम्मानित सदस्य चुना और फिर उपाध्यक्ष के पद पर भी चुने गए। उसी वर्ष उन्हें रायल सोसायटी का सदस्य भी चुना गया। उनको ऑक्सफोर्ड, पटना, इलाहाबाद, दिल्ली, बनारस, लखनऊ आगरा और सागर विश्वविद्यालय ने आदर के रूप में आनरेरी डॉक्टर ऑफ साइन्स की उपाधि से सम्मानित किया। फिर 1945 ई. में वे भारतीय वैज्ञानिक कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। सन् 1947–48 में वे राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थान के अध्यक्ष रहे। उन्हें सन् 1954 में पद्म विभूषण से विभूषित किया गया।

डॉ. भटनागर को उर्दू कविताओं को पढ़ने का बड़ा शौक था। वे स्वयं भी कवि थे। वे रूखे सूखे श्लोकों में कविता नहीं करते थे। वे एक जन्म जात प्रशासक थे और अपने अधीन प्रत्येक कार्यक्रम के सम्पर्क में रहते थे। उनकी विशेषता थी शीघ्र निर्णय लेना और अपने उच्च अफसरों के प्रति पूर्ण विश्वास रखना। इसलिए वे उनको दिए गए प्रत्येक कार्य को सफलता के साथ पूर्ण करने में सफल रहे। उनकी कार्य को शीघ्र पूर्ण कर लेने की योग्यता और अदम्य शक्ति के कारण उन्हें Livewire (जीवितवार) के नाम से पुकारा गया है। उनके शानदार केरियर का राज़ था हर किसी के पास सरलता से पहुँच जाना। डॉ. भटनागर C.S.I.R. और U.G.C. के निर्माता थे। वे C.S.I.R. के संस्थापक निदेशक थे U.G.C. के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने प्रशंसनीय योग्यता के साथ काम किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय उन्होंने केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत एक व्यवस्थित शोध संस्थान को स्थापित किया। जब सन् 1947 ई. में भारत स्वाधीन हो गया तब डॉ. भटनागर देशभर में बहुसंख्या में प्रयोगशालाएँ स्थापित करने में मुख्य साधक बने। उनमें से कुछ हैं – नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी, नई दिल्ली, सेन्ट्रल फ्यूएल रिसर्च इन्स्टीट्यूट धनबाद, द एन.एम.एल.जमशेदपुर, नेशनल केमिकल लेबोरेटरी पुना, द सी.एफ.टी. आर.आइ मैसूर, C.D.R.I. लखनऊ, दी सी.एस.आई.आर नई दिल्ली आदि। ये सब राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ C.S.I.R. के अधीन स्थापित की गई। C.S.I.R. ही आणविक शक्ति का शान्तिपूर्ण उपयोग में शोध कार्य की योजक संस्था है। इस दिशा में उनकी योजना के फलस्वरूप आणविक ऊर्जा कमीशन का गठन हुआ। यह कार्य दूसरे शक्तिमान डॉ. एच.जे.भाभा के अधीन रहा। डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर प्राकृतिक स्रोत और वैज्ञानिक शोध विभाग के मंत्रालय में सचिव के रूप में भी रहे। 1 जनवरी 1955 ई. को नई दिल्ली में उन्होंने अन्तिम श्वास ली। इति।

**73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी**
**कोटा (राजस्थान) 324009**

---

# ग्रीष्म ऋतु में पेय पदार्थ

चरक सहिता के अनुसार ग्रीष्म ऋतु में प्रातःकाल में उषापान में सबसे उत्तम नीबू पानी का सेवन करने की सलाह दी गई है।

एक चम्मच नीबू का रस, एक गिलास गर्म पानी में एक चुटकी सादा नमक का सेवन करना अति उत्तम है। स्फूर्ति बनी रहती है। नीबू पानी में नमक के स्थान पर शहद का प्रयोग भी उत्तम होता है।

ग्रीष्म ऋतु में शरीर में पानी की ज्यादा आवश्यकता होती है। नीबू पानी से शरीर में पसीना ज्यादा आता है, जो उत्तम स्वास्थ्य का परिचायक है।

चरक संहिता के अनुसार नीबू का प्रयोग दिन में प्रत्येक आहार के उपरान्त भी लेना चाहिए जिससे उदर में अम्लीय वातावरण न बनें।

**कृष्ण मोहन गोयल**
**113 बाजार कोट, अमरोहा –244221**

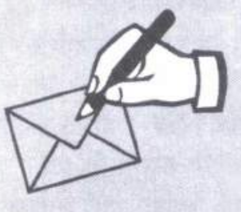

## पत्र/कविता

### वृक्षदेव वन्दना

पूजनीय वृक्ष हमारे, शुद्ध वायु कीजिए।
वायु दूषित दूर करके, प्राणवायु दीजिए।।
जरूरी है प्राणवायु देखो, हर जीव–जन्तु के लिए।
रक्षार्थ मानव का कर्त्तव्य यही, तत्पर दिखे हर वृक्ष के लिए।।
एक बचाते हैं जब तलक, सैंकड़ों कट जाते हैं तभी।
कैसे पूजन करें हे वृक्षदेव, लज्जित हैं हम सभी।।
अशोक के दर्शन होते नहीं, भला शोक कैसे मिटेगा।
न है वटवृक्ष, न है सावित्री, सोचो कैसे सौभाग्य बढ़ेगा।।
कमल, केवड़ा, कुश, दूर्वा, कदली, आम, चन्दन पूजनीय हैं।
तुलसी न रही जग में, कैसे कहोगे–तुलसी विवाह वन्दनीय है।।
च्यवनऋषि च्यवनप्राश देकर, आंवला तेल से केश काले कर गए।
न केवल धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाएँ, पौधारोपण करें नित नए।।
पिप्पलाद ने खाए पीपल के फल, होते थे वे भी शक्ति भरे।
प्राणवायु देते रहते रात–दिन, हर व्यक्ति अभिनन्दन करे।।
वृक्षों को नमन है "वेद" करता, वृक्ष समिधा दान करें।
फल–फूल, जड़ी–बूटियाँ देकर, यज्ञ से पावन वर्षा करें।।
वृक्ष लगाएँ–यज्ञ रचाएँ, प्रभुवर सुबुद्धि ऐसी दीजिए।
नारी–नर होवें सभी वृक्षप्रेमी, भाव उज्ज्वल कीजिए।।

**वेदप्रकाश शास्त्री**
**4–ई, कैलाश नगर, शास्त्री भवन,**
**फाजिलका, पंजाब –152123**
**मो. 9463428299**

## सर्गारम्भ में चार ऋषियों को ही वेदों का ज्ञान क्यों

एक बहिन जी ने हमें फोन पर कहा कि ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को एक–एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। इन ऋषियों में सभी पुरुष हैं, स्त्री कोई नहीं है। क्या यह पक्षपात नहीं है? उनका कहना है कि कुछ महिलाओं ने उनके सामने यह शंका रखी है कि ईश्वर को एक ऋषिका को भी वेद ज्ञान देना चाहिये था।

हमें नहीं लगता कि ईश्वर ने वेद ज्ञान देने में स्त्री जाति से कोई पक्षपात किया है। पक्षपात तो तब होता जब ईश्वर वेद में व उन ऋषियों को प्रेरणा करता कि यह ज्ञान केवल पुरुषों के लिये है स्त्रियों के लिये नहीं है। हम लोग यजुर्वेद के 26/2 मन्त्र से परिचित हैं। इसमें वेदों का ज्ञान मनुष्यमात्र अर्थात् स्त्री, पुरुष, ज्ञानी, अज्ञानी, अगड़े पिछड़े, छोटे व बड़े सभी प्रकार के मनुष्यों के लिये है।

हम वेद ज्ञान की प्रकिया भी जानते हैं। परमात्मा ने यह ज्ञान चार ऋषियों को उनकी समाधिस्थ अवस्था में आत्मा में प्रेरणा देकर दिया था। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर का साक्षात्कार किया था। उन्होंने यह भी बताया है कि परमात्मा ने वेदों का ज्ञान चार ऋषियों को अर्थ सहित दिया था। इन ऋषियों को ईश्वर की प्रेरणा हुई जिसके अनुसार इन्होंने ब्रह्मा जी को एक एक करके चारों वेदों का ज्ञान दिया। इस प्रकार वेद ज्ञान ईश्वर से ब्रह्मा ऋषि तक पहुंचा और उनके बाद इन ऋषियों ने त्रिविष्टिप वा तिब्बत में उत्पन्न सभी युवा स्त्री–पुरुषों को वेदों का ज्ञान दिया था। वेदों का एक नाम श्रुति है। इससे विदित होता है कि ऋषियों ने अन्य मनुष्यों को वेदों का ज्ञान उन्हें सुनाकर व बोलकर दिया था।

चारों वेद के मन्त्रों में उन ऋषि–ऋषिकाओं के नाम भी आते हैं जिन्होंने सृष्टि के आरम्भ काल में सबसे पहले वेदों के मन्त्रों के अर्थो का साक्षात्कार किया था और अन्य लोगों में उस वेदमंत्र व उनके अर्थो का प्रचार किया था। इन नामों में अनेक ऋषिकाओं के नाम भी आते हैं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि सृष्टि के आरम्भ में ही अमैथुनी सृष्टि की स्त्रियों ने ब्रह्मा जी वा अन्य ऋषियों से वेद पढ़े थे। ऋषि क्योंकि समाधि अवस्था को सिद्ध किया हुआ होता वा ईश्वर का साक्षात्कार किया हुआ होता है अतः इससे यह भी पता चलता है कि वेदमन्त्रों की द्रष्टा व प्रचारकत्री ऋषिकायें समाधिस्थ अवस्था को प्राप्त अर्थात् ईश्वर का साक्षात्कार की हुई थीं। इतिहास साक्षी है कि हमारे देश में वेदों की बड़ी बड़ी विदुषी देवियां व ब्रह्मवादिनी ऋषिकायें हुई हैं।

जब हम इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो हम यह पाते हैं कि वेदों के मन्त्रों की द्रष्टा जो स्त्रियां हुई हैं वह ऋषियों की तुलना में कम हैं। इसके बाद हमें ऋषियों का दर्शन, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि जो साहित्य उपलब्ध होता है उसमें भी हमें ऋषियों की ही प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। ऋषि दयानन्द जी के बाद अनेक आर्य विद्वानों ने वेदों के भाष्य किये हैं। इनमें भी हम किसी वेद विदुषी आर्य देवी को नहीं पाते जिसने चारों या किसी एक वेद का संस्कृत या हिन्दी में भाष्य किया है। यहां भी पुरुष विद्वानों की तुलना में विदुषी नारियों की संख्या सीमित ही दृष्टिगोचर होती है। इस पर हमारी बहनें और मातायें विचार कर सकती हैं।

आर्यसमाज की विदुषी देवियां यथा डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, डॉ. नन्दिता शास्त्री, डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती जी आदि यदि इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करें तो इससे सभी का मार्गदर्शन हो सकता है। इसे हमें उसी की न्याय व्यवस्था में छोड़ देना चाहिये और ईश्वर के विधान को सर्वथा उचित व न्यायपूर्ण मानकर स्वीकार करना चाहिये।

**मनमोहन कुमार आर्य**
**196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोन:09412985121**

**********

## आँवला अमृत फल

**आयुर्वेदिक मत–** अम्लप्रधान, लवणरहित, पाँच रस, लघु रुक्ष, शीतगुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक है। यह त्रिदोषहर विशेषकर पित्तशामक है। मैध्य, बल्य, रोचक, दीपन, यकृदुत्तेजक, हृद्य, कफघ्न, वृष्य, मूत्रल, प्रमेहघ्न, कुष्ठघ्न और रसायन है। दाह पैत्तिक, सिरशूल तथा मूत्रावरोध में इसका लेप करते हैं। नेत्ररोग में इसका स्वरस डालते हैं। आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि च्यवनप्राश इससे बनता है। आँवला शीतवीर्य है, अमृततुल्य गुण है। किसी भी ऋतु, प्रकृति, देश, काल और वय के लिए आँवला पथ्य है।

**वैज्ञानिक मत–** आँवला में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में है। नारंगी–संतरा और मौसम्बी की तुलना में आँवले में विटामिन सी बीस गुना अधिक है। आँवला लौह तत्व से भरपूर है इसीलिए इससे शरीर में नया रक्त उत्पन्न होता है।

आँवले में भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट, पोटेशियम, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, आयरन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह मैटाबोलिक क्रियाशीलता को बढ़ाता है। इससे जोड़ों के दर्द आर्थराइटिस आस्टोमोरोसिस में आराम मिलता है। गूदा 90.97%, तरी 70.5%, जूस 23.8%, खट्टा 3.28 प्रतिशत टाक्सिन को हमारे शरीर से बाहर निकालने में मदद करता है।

**आधुनिक मत–** इसके फल में गैलिक एसिड, टैनिक एसिड, शर्करा, अम्ल, व्यूमिन, कैल्शियम और विटामिन सी होता है।

डॉ. शौरी के अनुसार ताज़ा फल चिकना, पेशाब साफ करने वाला और हल्का दस्तावर होता है, सूखा फल शीतल होता है।

**उपयोग–**

किडनी में होने वाले संक्रमण और पथरी से छुटकारा पाने में, तनाव में आँवला लाभकारी है, इससे नींद अच्छी आती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, टाक्सिन शरीर से बाहर निकालने में मदद करता है। जोड़ों के दर्द आस्टोयोरोसिस आर्थराइटिस में आराम मिलता है। आँवला भोजन को पचाने में मदद करता है। आँवले के रस में हल्दी का चूर्ण मिलाकर शहद के साथ चाटने से सब प्रकार के प्रमेह मिटते हैं। आँवला और असगन्ध समान भाग लेकर दूध के साथ पीने से बल कान्ति में वृद्धि होती है। आँवले के सेवन को वयः स्थायन कहते हैं। इसके नियमित सेवन से उम्र कम मालूम होती है। आँवले का रस एक तोला, काली द्राक्ष पानी में मसली हुई 1 तोला और शहद आधा तोला एकत्र कर पीने से अम्ल पित्त मिटता है। आँवले और काले तिल समभाग लेकर बारीक चूर्णकर शहद के साथ चाटने से वृद्धत्व दूर होता है और शक्ति आती है।

**हरिश्चन्द्र आर्य**
**अमरोहा उ.प्र.**
**05922263422**

**********

# डी.ए.वी. सूरजपुर में यज्ञ द्वारा सत्रारम्भ

डी.ए.वी. सूरजपुर वैदिक धर्म, आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के विश्व कल्याणकारी सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के प्रचार–प्रसार में अग्रणी रहा है। स्कूल के विद्यार्थी, शिक्षक गण आर्य समाजों के दैनिक, साप्ताहिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सत्र का शुभारम्भ वैदिक मंत्रों के उच्चारण एवं हवन यज्ञ द्वारा किया गया। सभी विद्यार्थियों, शिक्षक गण तथा विद्यालय के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा से यज्ञ किया।

यज्ञ के पश्चात् प्रधानाचार्या डॉ. ममता गोयल ने सभी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया और अपने आर्शीवाद के बाद यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञ हमारी वैदिक संस्कृति का अनिवार्य अंग है। यज्ञ मन की शान्ति, सुख समृद्धि सांस्कृतिक मूल्यों को उजागर करने के लिए किया जाता है। यज्ञ की वैज्ञानिकता का वर्णन करते हुए बताया कि वातावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ करना वर्तमान समय की आवश्यकता है और ये बात वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित की जा चुकी है।

उन्होंने बताया कि वैदिक मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में आत्मसात करके ही वे व्यक्तिगत एवं सामाजिक उन्नति की ओर अग्रसर हो सकते है।

# किशोरपुर (पलवल) में देवयज्ञ एवं सत्संग

आर्य नगरी किशोरपुर जनपद पलवल (हरियाणा) में स्वर्गीय आर्य नेता श्री भरतसिंह सरपंच किशोरपुर की पुण्य तिथि के अवसर पर देवयज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों स्त्री–पुरुषों, बच्चों ने भाग लिया। यजमान की भूमिका श्री दैवेन्द्र आर्य तथा श्रीमती स्वदेश देवी ने निभाई यज्ञ ब्रह्मा श्री राधेलाल आर्यवीर थे।

यज्ञोपरान्त श्री नन्द किशोर आर्यकिशोरपुर (पलवल) ने देवयज्ञ व ईश्वर भक्ति के भजन सुनाए। मंच संचालन श्रीरामवीर आर्य शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त कवि वैदिक विद्वान् कुशल वक्ता पं. नन्दलाल निर्भय ने ईश्वर को निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, दयालु, न्यायकारी, सर्वाधार आदि बताया तथा समझाया कि परमात्मा अजन्मा है, वह कभी जन्म नहीं लेता। परमात्मा सब मनुष्यों का कर्मों का फल यथायोग्य देता है क्योंकि वह सच्चा न्यायकारी है इसलिए हमें उस परमपिता को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। श्री नन्दलाल निर्भय जी ने यह भी स्पष्ट किया कि जो व्यक्ति ईश्वर से डरते हैं वे अन्य किसी से नहीं डरते और जो ईश्वर से नहीं डरते वे सबसे डरते हैं।

आचार्य निर्भय समझाते हुए कहा कि अगर अपना भला चाहते तो परोपकारी, न्यायकारी, धर्मात्मा, ईश्वर भक्त बनो। वह महादेव परमात्मा तुम्हारा कल्याण कर देगा।

श्री देवेन्द्र आर्य ने विद्वानों का किशोरपुर पधारने पर आभार व्यक्त किया तथा श्रोताओं का भी धन्यवाद किया। शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण के उपरान्त समारोह का समापन किया गया। इस सत्संग समारोह की समस्त क्षेत्र में प्रशंसा हो रही है।

# आर्य समाज बीकानेर में नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज एस.बी.आई. बैंक के पीछे, गंगाशहर रोड़ बीकानेर में नव संवत्सर 2076 व आर्य समाज स्थापना दिवस के 144वें कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर श्री डी.एन. पुरोहित पूर्व कुलपति कि गायत्री मन्त्र बुद्धि प्रदाता मन्त्र है इसके उच्चारण से लाभ ही लाभ है।

इस अवसर पर स्व. श्री ठाकुर प्रसाद जी आर्य द्वारा स्थापित और संचालित वैदिक पुस्तकालय को उनके वेदज्ञ सुपुत्र श्री द्विजेन्द्र जी शास्त्री द्वारा आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर को सर्मिपित किया गया। श्री ठाकुर प्रसाद जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। वेद उनको कंठस्थ भी थे। 99 वर्ष की उम्र में भी वे पूर्ण स्वस्थ थे और हज़ारों पुस्तकों में से कौन सी पुस्तक कहा पड़ी है इसकी पूर्ण जानकारी उन्हें रहती। मुख्यअतिथि ने कहा कि श्री ठाकुर प्रसाद जी के पुत्र द्वारा आर्य समाज को इतना बड़ा पुस्तकालय सौंपना भी ऐतिहासिक घटना होगी।

विशिष्ट अतिथि डॉ. सतीश जी कच्छावा ने महर्षि दयानन्द के पाखंड, अंधविश्वास पोंगापंथी कुरीतियों पर विरोध कर आमजन को सहीमार्ग दिखाने की बात कही।

डॉ. राधे श्याम जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन की अनेक घटनाएँ सुनाई तथा कहा कि आर्य समाज के नियम बनाकर व स्थापना कर देशी रियासत के राजाओं महाराजाओं का सुधार करने के लिए प्रेरित किया जिन्होंने उनका अनुसरण किया।

इससे पूर्व अनेक पुरस्कारों से सम्मानित कवि श्री राजेन्द्र स्वर्णकार ने स्वरचित काव्य रचना सुनाकर और समाजसेवी व कविश्री राजारामजी ने स्वरचित पर्व सबंधी सुनकर श्रोताओ को भावविभोर किया।

कार्यक्रम के अंत में अखिल भारतीय स्तर की सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियोगिता में श्रीमती उषा देवी सोनी का तृतीय स्थान के साथ ही नकद पुरस्कार जीतने पर अभिनंदन किया गया।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

# डी.ए.वी. पटियाला में

कौर के मार्गदर्शन में शिक्षकवृन्द ने आर्य समाज के दस नियमों के काव्य रूपांतर को भजन के माध्यम से प्रस्तुत किया एवं महात्मा जी को श्रद्धापूर्वक याद करते हुए उनके प्रिय भजन 'प्रभु जी क्या' भेंट करूँ मैं तेरी' प्रस्तुत किया।

बच्चों ने मधुर भजन 'ओ३म् ओ३म् बोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल' भजन की प्रस्तुति से सारा वातावरण 'ओ३ममय' बना दिया। मधुर भजनों की प्रस्तुति ने मुख्य अतिथि, अन्य अतिथिगण, बच्चों के सैंकड़ों अभिभावकों व सभी श्रोतागण को प्रशंसा करने तथा भावविभोर हो कर तालियाँ बजाने के लिए मजबूर कर दिया।

प्राचार्य तिवारी ने बच्चों को आशीर्वाद देने के लिए स्वामी जी व समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए अन्य अतिथिगण का धन्यवाद प्रकट किया। इस अवसर पर विभिन्न डी.ए.वी.संस्थाओं के प्राचार्यगण, स्थानीय आर्य समाज के पदाधिकारी व सदस्य, बच्चों के अभिभावक तथा नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

'शांति–पाठ' के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 15/16-05-2019

# डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, अबोहर में हुआ यज्ञ का आयोजन

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल का नव सत्र एकादश कुण्डीय यज्ञ द्वारा आयोजित किया गया। कक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी व उनके शिक्षक यजमान बने। विद्यालय के धर्म शिक्षक श्री अशोक शर्मा शास्त्री द्वारा पवित्र वेद मंत्रों का उच्चारण किया गया व विद्यालय के उत्थान हेतु सामूहिक प्रार्थना की गई।

प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा ने विद्यार्थियों समूह स्टाफ व अभिभावकों को नव सत्र की शुभकामनाएं दी।

स्कूल चेयरमैन श्री देव मित्र आहूजा ने कहा कि विद्यार्थियों को अपना लक्ष्य स्पष्ट करना चाहिए जब तक लक्ष्य स्पष्ट नहीं होगा तब तक आप जीवन की किसी भी मंजिल को प्राप्त करने के लिए किसी भी मार्ग का चयन नहीं कर सकते।

इस अवसर पर शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले व विषयों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया। संगीत शिक्षक श्री दिलीप माथुर द्वारा सुंदर भजन प्रस्तुत किए गए। शांति पाठ और प्रसाद वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

# डी.ए.वी. फतेहाबाद ने मनाई महात्मा हंसराज जयन्ती

सेठ बद्री प्रसाद डी.ए.वी. स्कूल फतेहाबाद में महात्मा हंसराज जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर डी.ए.वी. स्कूल के बच्चों ने तथा स्टॉफ ने मिलकर सवा लाख बार गायत्री मंत्र का जाप किया।

संगीत अध्यापक अश्विनी शर्मा ने भजन के माध्यम से महात्मा जी के जीवन पर प्रकाश डाला। बच्चों ने महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वह डी.ए.वी. आन्दोलन के संचालक थे। सबसे पहला डी.ए.वी. स्कूल लाहौर में खोला गया था। उस स्कूल के मुख्याध्यापक महत्मा हंसराज जी थे और जब यह स्कूल कॉलेज बना तो डी.ए.वी. कॉलेज के सबसे पहले प्रिंसिपल भी महात्मा हंसराज जी थे। महात्मा हंसराज जी का जीवन तपस्या, त्याग व संघर्षों से भरा था। उनके जीवन से हमे शिक्षा मिलती हैं कि हमे मुश्किलों से घबराना नही चाहिए बल्कि संघर्षों का सामना करते हुए आगे बढना चाहिए। महात्मा हंसराज ने पूरा जीवन डीएवी स्कूल में अवैतनिक प्रिसिंपल के रुप में काम करके स्वयं अभावों में जीते हुए देश सेवा की। स्वामी दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व से प्रेरित होकर देश में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने में अहम योगदान दिया। महात्मा हंसराज प्रेम व त्याग की एक ऐसी मिसाल थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश के उत्थान हेतु लगा दिया। प्राचार्या श्रीमती सुनीता मदान ने बच्चों का आह्वान किया कि उन सब को महात्मा जी के जीवन से प्रेरणा लेकर विद्यार्थी जीवन में परिश्रम व लगन से काम करके अपने जीवन को सही दिशा प्रदान करनी चाहिए व महात्मा जी के द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

# डी.ए.वी. कालांवाली में यज्ञ से नवीन सत्रारम्भ

माता पुन्ना देवी डी.ए.वी. सीनियर सैकंड्री पब्लिक स्कूल कालांवाली में प्रधानाचार्या के नेतृत्व में नए सत्र के शुभारम्भ में सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया गया। सभी बच्चों ने पूर्ण उत्साह तथा श्रद्धा के साथ वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यज्ञ की पावन अग्नि में आहुतियाँ डालीं। यज्ञ के अंत में प्रधानाचार्या जी ने सभी को नए सत्र के शुभारम्भ पर शुभकामनाएँ प्रदान कीं तथा मेहनत के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। यज्ञ के अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**